بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक
बदर
क़ादियान
Weekly Badar Qadian
HINDI

अल्लाह तआला का आदेश

وَاعۡبُدُوا اللّٰہَ وَلَا تُشۡرِکُوۡا بِہٖ شَیۡـًٔا وَّبِالۡوَالِدَیۡنِ اِحۡسَانًا وَّبِذِی الۡقُرۡبٰی وَالۡیَتٰمٰی وَالۡمَسٰکِیۡنِ وَ
الۡجَارِ ذِی الۡقُرۡبٰی وَالۡجَارِ الۡجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالۡجَنۡۢبِ وَابۡنِ السَّبِیۡلِ ۙ وَمَا مَلَکَتۡ اَیۡمَانُکُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَا
یُحِبُّ مَنۡ کَانَ مُخۡتَالًا فَخُوۡرَا ۔   (النساء:۳۷)

अनुवाद: और अल्लाह की इबादत करो और किसी भी चीज़ को उसका साझी न ठहराओ। और माता-पिता के साथ भलाई करो, और क़रीबी रिश्तेदारों के साथ भी, और यतीमों के साथ भी, और ग़रीब (मिस्कीन) लोगों के साथ भी, और रिश्तेदार पड़ोसियों के साथ भी, और गैर-रिश्तेदार पड़ोसियों के साथ भी, और अपने साथ बैठने वालों (साथियों) के साथ भी, और मुसाफिरों के साथ भी, और उनके साथ भी जो तुम्हारे दाहिने हाथ के मालिकाना हक़ में हों। निश्चय ही अल्लाह उस व्यक्ति को पसंद नहीं करता जो घमंडी हो और डींगें मारने वाला हो।

संपादक : शेख मुजाहिद अहमद | उप संपादक : सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद   वर्ष- 11 | अंक -34-35   06-13 रबीउल अव्वल 1448 हिज्री कमरी, 20-27 ज़हूर 1405 हिज्री शम्सी, 20-27 अगस्त 2026 ई.

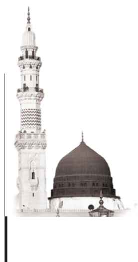

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

عَنۡ أَبِي هُرَيۡرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ اللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ يَقُولُ يَوۡمَ الۡقِيَامَةِ: يَا ابۡنَ آدَمَ، مَرِضۡتُ فَلَمۡ تَعُدۡنِي، قَالَ يَا رَبِّ: كَيۡفَ أَعُودُكَ وَأَنۡتَ رَبُّ الۡعَالَمِينَ؟ قَالَ: أَمَا عَلِمۡتَ أَنَّ عَبۡدِي فُلَانًا مَرِضَ فَلَمۡ تَعُدۡهُ؟ أَمَا عَلِمۡتَ أَنَّكَ لَوۡ عُدۡتَهُ لَوَجَدۡتَنِي عِنۡدَهُ؟ يَا ابۡنَ آدَمَ، اسۡتَطۡعَمۡتُكَ فَلَمۡ تُطۡعِمۡنِي، قَالَ يَا رَبِّ: وَكَيۡفَ أُطۡعِمُكَ وَأَنۡتَ رَبُّ الۡعَالَمِينَ؟ قَالَ: أَمَا عَلِمۡتَ أَنَّهُ اسۡتَطۡعَمَكَ عَبۡدِي فُلَانٌ؟ فَلَمۡ تُطۡعِمۡهُ، أَمَا عَلِمۡتَ أَنَّكَ لَوۡ أَطۡعَمۡتَهُ لَوَجَدۡتَ ذَلِكَ عِنۡدِي؟ يَا ابۡنَ آدَمَ، اسۡتَسۡقَيۡتُكَ فَلَمۡ تَسۡقِنِي، قَالَ يَا رَبِّ: كَيۡفَ أَسۡقِيكَ وَأَنۡتَ رَبُّ الۡعَالَمِينَ؟ قَالَ: اسۡتَسۡقَاكَ عَبۡدِي فُلَانٌ، فَلَمۡ تَسۡقِهِ، أَمَا إِنَّكَ لَوۡ سَقَيۡتَهُ وَجَدۡتَ ذَلِكَ عِنۡدِي؟   (مسلم كتاب البر والصلة باب فضل عيادة المريض)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन फ़रमाएगा, "ऐ आदम के बेटे! मैं बीमार था, लेकिन तुमने मेरी बीमारी में मेरी ख़ैरियत पूछने नहीं आए।" बंदा कहेगा, "ऐ मेरे रब! मैं तेरी ख़ैरियत कैसे पूछता, जबकि तू सारे जहानों का पालनहार है?" अल्लाह तआला फ़रमाएगा, "क्या तुम्हें मालूम नहीं था कि मेरा अमुक बंदा बीमार था, लेकिन तुम उसकी ख़ैरियत पूछने नहीं गए। क्या तुम्हें यह पता नहीं था कि अगर तुम उसकी ख़ैरियत पूछने जाते, तो मुझे उसके पास पाते।" "ऐ आदम के बेटे! मैंने तुमसे खाना माँगा था, लेकिन तुमने मुझे खाना नहीं दिया।" इस पर आदम का बेटा कहेगा, "ऐ मेरे रब! मैं तुझे कैसे खाना खिलाता, जबकि तू तो सारे जहानों का पालनहार है।" अल्लाह तआला फ़रमाएगा, "क्या तुम्हें याद नहीं कि मेरे अमुक बंदे ने तुमसे खाना माँगा था, लेकिन तुमने उसे खाना नहीं खिलाया। क्या तुम्हें मालूम नहीं था कि अगर तुम उसे खाना खिलाते, तो उसका सवाब मेरे पास पाते।" "ऐ आदम के बेटे! मैंने तुमसे पानी माँगा था, लेकिन तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया।" आदम का बेटा कहेगा, "ऐ मेरे रब! मैं तुझे कैसे पानी पिलाता, जबकि तू ही सारे जहानों का पालनहार है।"

इस पर अल्लाह तआला फ़रमाएगा, "मेरे अमुक बंदे ने तुमसे पानी माँगा था, लेकिन तुमने उसे पानी नहीं पिलाया। अगर तुम उसे पानी पिलाते, तो उसका सवाब मेरे पास पाते।"

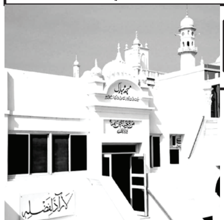

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम इमाम मेहदी - मसीह मौऊद का उपदेश

मानव जाति से सहानुभूति करो:

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"इस बात को अच्छी तरह याद रखो कि अल्लाह तआला के दो हुक्म हैं। पहला यह कि उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ—न उसकी ज़ात में, न उसकी सिफ़ात (गुणों) में और न उसकी इबादत में। दूसरा यह कि पूरी मानव जाति से सहानुभूति करो और भलाई करो। भलाई से यह मतलब नहीं कि केवल अपने भाइयों और रिश्तेदारों के साथ ही अच्छा व्यवहार करो, बल्कि कोई भी हो—आदम की संतान हो और अल्लाह तआला की मख़लूक़ (सृष्टि) में से कोई भी हो। यह मत सोचो कि वह हिन्दू है या ईसाई।

मैं तुमसे सच कहता हूँ कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे साथ न्याय करने का अधिकार अपने हाथ में रखा है। वह नहीं चाहता कि तुम स्वयं न्याय करो। तुम जितनी अधिक नरमी अपनाओगे और जितनी अधिक विनम्रता और नम्र स्वभाव दिखाओगे, अल्लाह तआला उतना ही तुमसे प्रसन्न होगा। अपने दुश्मनों का मामला अल्लाह तआला पर छोड़ दो। क़यामत निकट है। दुश्मन तुम्हें जो तकलीफ़ें देते हैं, उनसे तुम्हें घबराना नहीं चाहिए। मैं देखता हूँ कि अभी तुम्हें उनसे बहुत दुख सहना पड़ेगा, क्योंकि जो लोग सभ्यता की सीमा से बाहर निकल जाते हैं, उनकी ज़बान इस तरह चलती है जैसे कोई पुल टूट जाए और अचानक बाढ़ आ जाए। इसलिए एक धर्मपरायण व्यक्ति को चाहिए कि वह अपनी ज़बान पर काबू रखे।"   (अल-हकम, 24 जनवरी 1907, मलफ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 130)

वह नेकी का वह दर्जा भी हासिल करो कि पूरी मानव जाति तुम्हें अपनी संतान जैसी दिखाई देने लगे

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु, सूरह अन-नहल की आयत संख्या 91 की तफ़सीर बयान करते हुए फ़रमाते हैं:

"जब इंसान किसी पर एहसान करता है तो उसके मन में यह विचार होता है कि अमुक व्यक्ति ने मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया है, इसलिए मैं उसे उससे भी अच्छा बदला दूँ, ताकि मेरी अच्छी प्रतिष्ठा बने। या जब वह किसी गुनाहगार की गलती माफ़ करता है तो उसके मन में यह ख़याल आ जाता है कि यदि मैं इसके साथ अच्छा व्यवहार करूँगा तो इसके दिल से दुश्मनी निकल जाएगी और यह मेरा मित्र बनकर मेरी शक्ति बढ़ाने का कारण बनेगा।

लेकिन एक माँ जब अपने बच्चे से प्रेम करती है और उसके लिए त्याग करती है, तो उसमें बदले की ज़रा भी इच्छा नहीं होती। बल्कि उसके प्रेम की बुनियाद उसके अपने त्याग पर ही होती है। जब किसी स्त्री के यहाँ संतान नहीं होती तो उसके मन में यह विचार नहीं आता कि काश मेरा बेटा होता तो वह मेरी सेवा करता। बल्कि उसे संतान की इच्छा इस भावना के साथ होती है कि मैं उसे पालती, उसकी सेवा करती, उसे कपड़े पहनाती, उसका विवाह कराती और उसके बच्चों को खिलाती। संक्षेप में, जब एक माँ के मन में संतान की इच्छा पैदा होती है तो उसके दिल में उससे सेवा लेने का सबसे छोटा भी विचार नहीं होता। बल्कि इस इच्छा का कारण संतान की सेवा करने का उत्साह होता है।

यही नेकी की वह भावना है जो मनुष्य के लिए सबसे बड़ी नेकी है। और इसे प्राप्त करने के बाद ही मनुष्य का नैतिक जीवन पूर्ण होता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब तुम एहसान का दर्जा हासिल कर लो, जहाँ तुम्हें लेने से अधिक देने की इच्छा होती है, तब नेकी का वह ऊँचा दर्जा भी प्राप्त करो कि पूरी मानव जाति तुम्हें अपनी संतान जैसी दिखाई देने लगे और उनकी सेवा का उत्साह तुम्हारे दिल में उसी तरह उमड़ने लगे, जैसे एक माँ के दिल में अपने बच्चे के लिए प्रेम हमेशा उमड़ता रहता है।"

(तफ़सीर-ए-कबीर, जिल्द 6, पृष्ठ 169, प्रकाशित यूके)

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़्ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

मजलिस-ए-इरफ़ान का एक वैश्विक कार्यक्रम

जब से अल्लाह तआला की अनुमति से जमाअत-ए-अहमदिया की स्थापना हुई है, तब से जमाअत की तरबियत (प्रशिक्षण) के लिए "मजलिस-ए-इरफ़ान" ने एक बुनियादी भूमिका निभाई है। यह मजलिस-ए-इरफ़ान हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में शुरू हुई थी। उस समय हुज़ूर के मुबारक इरशाद उसी समय लिख लिए जाते थे और फिर उन्हें अख़बार अल-हकम और अल-बदर में प्रकाशित किया जाता था। यही मजलिस-ए-इरफ़ान बाद में मलफ़ूज़ात हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के रूप में प्रकाशित हुई। इसके बाद हज़रत अक़्दस ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अक़्दस ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अक़्दस ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रज़ियल्लाहु अन्हु तथा हज़रत अक़्दस ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहिमहुल्लाह तआला के मुबारक दौर की मजलिस-ए-इरफ़ान भी जमाअत के अख़बारों और पुस्तकों में प्रकाशित हैं तथा सोशल मीडिया पर भी उपलब्ध हैं।

हज़रत अक़्दस अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला के मुबारक दौर में यह मजलिस-ए-इरफ़ान प्रत्येक सप्ताह एम.टी.ए. के कार्यक्रम "This Week With Huzur Anwar" के अंतर्गत प्रसारित होती है और सोशल मीडिया पर भी उपलब्ध है।

हर दौर में "मजलिस-ए-इरफ़ान" ऐसा कार्यक्रम रहा है, जिससे जमाअत के सदस्यों को तरबियत, तबलीग़, शिक्षा और प्रशासन से संबंधित अनेक प्रकार का मार्गदर्शन मिलता रहा है। कई बार किसी राजनीतिक या विद्वान व्यक्ति की भी हुज़ूर से मुलाक़ात होती है और हुज़ूर उन्हें उनके देश के बारे में, उनके ज्ञान के बारे में तथा दुनिया में फैली अशांति को दूर करने के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। संक्षेप में यह एक अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम है, जो प्रत्येक श्रोता के लिए अत्यंत उपयोगी मार्गदर्शक है।

बदर के पाठकों में इस कार्यक्रम के प्रति रुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से, उदाहरण के रूप में 2 जनवरी 2026 को हुई उस मुलाक़ात का सार प्रस्तुत किया जा रहा है, जो हुज़ूर अनवर ने अमेरिका के वर्जीनिया के ख़ुद्दाम के साथ की।

उस अवसर पर पहला प्रश्न किया गया कि:

दुनियावी शिक्षा के साथ जमाअत की पुस्तकों का अध्ययन कैसे किया जा सकता है?

हुज़ूर अक़्दस ने फ़रमाया: दिन में 24 घंटे होते हैं। यदि कोई व्यक्ति 6 घंटे सोए, 2 घंटे खाने में लगाए, 2 घंटे नमाज़ों में लगाए, विश्वविद्यालय की पढ़ाई में 7 घंटे लगाए और वापस आने के बाद 2-3 घंटे पढ़ाई करे, तो भी उसके पास 4 घंटे बचते हैं। क्या उनमें से आधा घंटा भी नहीं निकाला जा सकता? यदि तुम चाहो तो समय निकाल सकते हो। यदि यह कहो कि मैं थक गया हूँ, तो इसका अर्थ है कि दुनिया तुम्हारी पहली प्राथमिकता बन गई है। इसलिए अपने जीवन को व्यवस्थित करो। यदि अध्ययन के लिए आधा घंटा भी निकाल सको तो ठीक है, और जब रुचि बढ़ जाएगी तो अधिक समय भी दिया जा सकता है।

दूसरा प्रश्न किया गया कि: मैं आदरणीय मौलाना अताउल्लाह कलीम साहब का पोता हूँ। यदि हुज़ूर को उनके संबंध में कोई याद हो तो कृपया बताने की कृपा करें।

हुज़ूर ने फ़रमाया: मैंने उनके साथ काम तो नहीं किया, लेकिन जितना मैंने देखा और सुना है, उसके अनुसार वे अत्यंत निस्वार्थ वक़्फ़-ए-ज़िंदगी थे। मैंने सुना है कि वे प्रतिदिन तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते थे और जमाअत के लिए दुआएँ किया करते थे। तुम भी दुआ करो कि अल्लाह तआला मुझे भी नेक बनाए। दूसरी बात यह कि जिन दिनों उन्होंने घाना में सेवा की, उस समय वहाँ की परिस्थितियाँ अच्छी नहीं थीं। लेकिन उन्होंने कभी शिकायत नहीं की। वे हमेशा हँसते-मुस्कुराते रहते थे। यही कारण है कि आज तुम इस स्थान पर हो। इसलिए अल्लाह तआला पर भरोसा, नमाज़ें और दुआ बहुत आवश्यक हैं।

एक प्रश्न यह किया गया कि: ख़ाकसार क्षेत्रीय नाज़िम वकार-ए-अमल के रूप में सेवा कर रहा है। कुछ ख़ुद्दाम मेहनत वाले काम या ऐसे काम, जिनसे हाथ गंदे होते हैं, नहीं करते। ऐसे ख़ुद्दाम में वकार-ए-अमल की भावना कैसे पैदा की जाए?

हुज़ूर ने फ़रमाया: वकार-ए-अमल का अंग्रेज़ी नाम Dignity of Labour रखा गया है। उन्हें बताओ कि इसी में तुम्हारी गरिमा (Dignity) है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में प्रमाणित है कि ग़ज़वा-ए-अहज़ाब के अवसर पर आप स्वयं मिट्टी खोद रहे थे, बल्कि आपके पेट पर भी मिट्टी लगी हुई थी। ऐसे ख़ुद्दाम के सामने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का उदाहरण प्रस्तुत करो और बताओ कि इससे सवाब भी मिलता है और स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।

एक प्रश्न यह किया गया कि: मैं भविष्य में डॉक्टर बनना चाहता हूँ। हुज़ूर क्या मार्गदर्शन देंगे कि शिक्षा और पेशेवर सफलता के साथ-साथ धर्म और अल्लाह तआला से मजबूत संबंध कैसे बनाए रखें? हुज़ूर ने फ़रमाया: बहुत से अहमदी डॉक्टर हैं जो नमाज़ पढ़ते हैं और तहज्जुद भी पढ़ते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय डॉक्टर अब्दुल सत्तार शाह साहब डॉक्टर थे और अस्पताल में काम करते थे। ये हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहिमहुल्लाह तआला के नाना थे। वे डॉक्टरी भी करते थे और तबलीग़ भी करते थे।

उनका एक प्रसंग है कि एक दिन वे मस्जिद में तबलीग़ कर रहे थे। एक विरोधी ने मस्जिद का मिट्टी का लोटा उठाकर उनके सिर पर मार दिया, जिससे उनका सिर फट गया। वे अस्पताल गए और पट्टी करवाई। मारने वाला व्यक्ति बहुत डर गया। जब उसने माफ़ी माँगी तो उन्होंने कहा, "मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया। अब मेरी तबलीग़ सुन लो।"

वह व्यक्ति बहुत प्रभावित हुआ कि मैंने इन्हें मारा, लेकिन इन्होंने मुझे माफ़ कर दिया और बड़े अच्छे व्यवहार से मुझसे बात भी कर रहे हैं। उसने समझा कि निश्चित रूप से अहमदियत सच्ची है। इसलिए उसने बैअत कर ली। इसी प्रकार तुम भी डॉक्टर बनने के बाद अपने मरीजों के साथ अच्छा व्यवहार करना।

हुज़ूर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहब का एक प्रसंग भी सुनाया। फ़रमाया कि वे अंग्रेज़ों के समय सिविल सर्जन थे। वे इतनी अधिक आर्थिक कुर्बानी किया करते थे कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को उनसे कहना पड़ा कि कुछ नियंत्रण करें और अपने लिए भी कुछ रखें। बल्कि यहाँ तक फ़रमाया कि आपने इतनी आर्थिक कुर्बानी कर दी है कि अब यदि आप और न भी दें तो कोई अंतर नहीं पड़ेगा।

इसी प्रकार हुज़ूर ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु का उल्लेख करते हुए फ़रमाया कि वे भी हकीम थे। हिकमत (चिकित्सा) से जो कमाते थे, उसे इस्लाम की ख़ातिर खर्च कर देते थे। वे ग़रीबों की सेवा करते थे और उनसे हमदर्दी रखते थे। हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम भी ग़रीबों की सेवा करोगे तो अल्लाह भी प्रसन्न होगा और जमाअत की सेवा भी होगी। एक प्रश्न किया गया:

प्यारे हुज़ूर! दुनिया में राजनीतिक अन्याय के विरुद्ध आवाज़ कैसे उठाई जाए?

हुज़ूर ने फ़रमाया: जहाँ तक हमारी पहुँच है, वहाँ तक हम प्रयास कर रहे हैं। जहाँ तक मेरी पहुँच है, मैं कर रहा हूँ और जहाँ तक आपकी पहुँच है, आप करते रहें। मुझे अमेरिका में कैपिटल हिल में बोलने का अवसर मिला था। वहाँ मैंने उन्हें शांति की बातें बताईं। बाद में वहाँ के एक सीनेटर ने कहा कि जो बातें आप बता रहे हैं, वे बहुत अच्छी हैं और उनकी आवश्यकता भी है, लेकिन हम उन पर अमल नहीं कर सकते।

हुज़ूर ने फ़रमाया कि उनके अपने राजनीतिक उद्देश्य होते हैं और उन्हें पूरा करने के लिए वे पैसे देकर भी अपने पक्ष में आवाज़ उठवाते हैं। जब न्याय के मापदंड अपने लिए कुछ और हों और दूसरों के लिए कुछ और, तो फिर वास्तविक न्याय कैसे स्थापित हो सकता है? इसलिए जहाँ तक संभव हो, अपने आसपास न्याय स्थापित करने का प्रयास करते रहें।

एक प्रश्न किया गया कि कुछ शिया (अहल-ए-तशीअ) लोग अहल-ए-बैत और आल-ए-रसूल को ख़िलाफ़त पर प्राथमिकता देते हैं। इस बारे में हुज़ूर का क्या इरशाद है?

हुज़ूर ने फ़रमाया: वे तो नुबुव्वत पर भी प्राथमिकता देते हैं। वे तो यहाँ तक कहते हैं कि हज़रत जिब्रील से गलती हो गई थी, वह्य (ईश्वरीय संदेश) हज़रत अली पर आनी थी, लेकिन वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर उतार दी गई।

हुज़ूर ने फ़रमाया कि ये लोग पहले तीनों ख़लीफ़ाओं को भी ग़लत कहते हैं। यह सवाल फ़ितना फैलाने वालों ने उठाया है। वे कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि मेरे अहल-ए-बैत को प्राथमिकता दो, जबकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का आशय यह था कि जिस प्रकार तुम अपने क़रीबी रिश्तेदारों की बात ध्यान से सुनते हो, उसी प्रकार मेरी बातों को भी ध्यान से सुनो। लेकिन ये लोग इसकी ग़लत व्याख्या करते हैं।

कुछ वर्ष पहले एक शिया परिवार ने बैअत की। वे कहते हैं कि अहमदी बनने के बाद उन्हें पता चला कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सच्चा प्रेम क्या होता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि चारों ख़लीफ़ा ख़ुलफ़ा-

शेष पृष्ठ 16 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें
नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा)
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 03 जुलाई 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

अल्लाह तआला के आदेश और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श पर चलते हुए, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन में भी हमें गरीबों से प्रेम, उदारता और दानशीलता की बहुत-सी घटनाएँ मिलती हैं।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम की दयालुता और उदारता की कुछ घटनाएँ

हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि

हुज़ूर अलैहिस्सलाम की उदारता एक अथाह समुद्र की तरह थी और आपका हाथ ऐसे बादल के समान था जो मोती बरसाता हो। अर्थात् मोती बरसाने वाले बादल की तरह बरसता था और सबको तृप्त कर देता था। रमज़ान के महीने में यह सिलसिला और भी अधिक बढ़ जाता था। हुज़ूर अलैहिस्सलाम छिपे हुए तरीक़ों से ज़रूरतमंदों की सहायता करते रहते थे। सबसे क़ीमती वस्तु भी किसी दूसरे को दे देने में आपको कभी कोई संकोच नहीं होता था।

आपका यह स्वभाव जीवन के हर दौर में दिखाई देता है। पैग़ंबरी का दावा करने और अल्लाह की ओर से नियुक्त होने से पहले भी यह गुण स्पष्ट रूप से मौजूद था। इसलिए मियाँ ग़फ़्फ़ारा साहिब (अब्दुल ग़फ़्फ़ार) कश्मीरी, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपकार और दयालुता का उल्लेख करते हुए बताते हैं कि जब उनका विवाह हुआ, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनकी सहायता के लिए उन्हें दो क़ीमती गहने दे दिए। यह घटना उस समय की है जब आपने अभी अपना दावा नहीं किया था और एकांत जीवन व्यतीत कर रहे थे।

हज़रत शैख़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि यह कोई अकेली घटना नहीं थी, बल्कि ऐसे बहुत-से उदाहरण हैं।

ऐसा कोई अवसर नहीं आया कि किसी ने आपसे कुछ माँगा हो और आपने उसे न दिया हो, या किसी की ज़रूरत को बिना उसके माँगे समझकर उसकी सहायता न की हो। आप वास्तव में करीम इब्ने करीम इब्ने करीम थे।

(संदर्भ: सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम, हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, भाग तृतीय, पृष्ठ 312; सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम, भाग द्वितीय, पृष्ठ 290; फ़िरोज़-उल-लुग़ात, पृष्ठ 52)

हज़रत बशीर अहमद साहिब भट्टी की माता जी बयान करती हैं कि एक बार हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह सानी, हज़रत मिर्ज़ा महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु के विवाह के अवसर पर एक मिरासी महिला ढोल लेकर हुज़ूर अलैहिस्सलाम के घर आ गई और ढोल बजाने लगी। उसका उद्देश्य कुछ प्राप्त करना था, क्योंकि विवाह का अवसर था और वहाँ ऐसा रिवाज भी था। जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने ढोल की आवाज़ सुनी तो तुरंत उधर ध्यान दिया और फ़रमाया कि उससे कहो कि ढोल बजाना बंद करे और जो कुछ वह माँगती है, उसे दे दो। इसलिए उसे चार-पाँच रुपये दे दिए गए। फिर उसने कहा कि अब सर्दियों का मौसम आ गया है और मुझे ठंड लगती है। तब आपने उसे एक रज़ाई भी दिलवा दी, लेकिन ढोल बजवाना बंद करवा दिया।

(संदर्भ: रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 3, पृष्ठ 441)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि

"सबसे पहले यह बात समझ लेनी चाहिए कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम को किसी विशेष प्रकार के कपड़े पहनने का शौक़ नहीं था। जीवन के अंतिम वर्षों में आपके पास साधारण और सिले-सिलाए कपड़े उपहार के रूप में बहुत आते थे। विशेषकर कोट, सदरी, पायजामा और क़मीज़ आदि, जिन्हें अक्सर शैख़ रहमतुल्लाह साहिब लाहौरी हर ईद और बकरीद पर भेंट के रूप में लाते थे। आप वही उपयोग करते थे। इनके अतिरिक्त कभी-कभी आप स्वयं भी कपड़े सिलवा लिया करते थे। पगड़ी प्रायः स्वयं ख़रीदकर बाँधते थे।

जिस प्रकार कपड़े बनते और उपयोग में आते थे, उसी प्रकार वे साथ-साथ दूसरों को भी दिए जाते रहते थे। हर समय लोग तबर्रुक के रूप में कपड़े माँगते रहते थे। कभी-कभी तो यह स्थिति हो जाती थी कि आप एक कपड़ा तबर्रुक के रूप में दे देते और उसी समय दूसरा सिलवाकर पहनना पड़ता। कुछ समझदार लोग अपना एक नया कपड़ा भेज देते और साथ में निवेदन करते कि हुज़ूर अपना पहना हुआ कपड़ा तबर्रुक के रूप में प्रदान कर दें।"

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, भाग 2, पृष्ठ 416, रिवायत संख्या 447)

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उनसे फ़रमाया:

"मेरे पास एक छोटी-सी हमाइल (छोटा क़ुरआन शरीफ़) हुआ करती थी। उसका लिखावट भी बहुत साफ़ थी और वह मुझे बहुत पसंद थी। लेकिन एक व्यक्ति ने उसे माँग लिया, इसलिए मैंने उसे दे दिया ताकि किसी माँगने वाले को मना न करना पड़े।"

(ज़िक्र-ए-हबीब, हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 138)

हज़रत क़ुरैशी शैख़ मुहम्मद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, जो क़ादियान के रहने वाले थे और डाकघर में डाक पहुँचाने का काम करते थे, कहते हैं:

"एक बार मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में बाँटने के लिए बहुत से मनीऑर्डर लेकर गया। उनकी राशि हुज़ूर को देने के बाद मैं शहर में डिलीवरी करने चला गया। लगभग चार बजे जब मैं डाकघर लौटा और पोस्टमास्टर को बाँटे हुए मनीऑर्डरों का हिसाब देने लगा, तो पता चला कि मुझसे गलती से कहीं छह रुपये अधिक दे दिए गए हैं।

मैं बहुत परेशान हुआ, क्योंकि हुज़ूर को जो राशि दी गई थी, वह भी बहुत अधिक थी। पोस्टमास्टर, जिसका नाम अल्लाह दित्ता था और जो एक कट्टर ग़ैर-अहमदी था, उसने कहा कि अच्छा होगा तुम जाकर मिर्ज़ा साहिब से पूछ लो।

मेरा मन नहीं था कि फिर जाकर हुज़ूर को तकलीफ़ दूँ, लेकिन उसके बार-बार कहने पर मैं गया और निवेदन किया कि हुज़ूर! आज मुझसे गलती से किसी को छह रुपये अधिक दे दिए गए हैं।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:' मियाँ! मुझे तो यह भी याद नहीं कि कितनी राशि प्राप्त हुई थी और मैं तो उसमें से कुछ ख़र्च भी कर चुका हूँ।' अर्थात लोगों को दे भी चुका हूँ। 'लेकिन कोई बात नहीं, तुम ग़रीब आदमी हो। मैं यह रकम तुम्हें दे देता हूँ। आगे से सावधानी से काम किया करो, क्योंकि तुम ग़रीब हो।'

इस घटना से हुज़ूर अलैहिस्सलाम के श्रेष्ठ चरित्र, उदारता और ग़रीबों के प्रति करुणा का पता चलता है।"

(रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 5, पृष्ठ 337–338)

हज़रत मीर मेहदी हुसैन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक बार मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब ने मुझसे 'चश्मा मसीही' की एक प्रति माँगी। मैंने कहा कि हज़रत साहिब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि इतनी प्रतियाँ दफ़्तर में अवश्य रहनी चाहिए, क्योंकि कभी-कभी सरकार प्रकाशित पुस्तकों की प्रतियाँ मँगवा लेती है। इसलिए अब कोई अतिरिक्त प्रति नहीं है जो आपको दी जा सके। यदि आप हज़रत साहिब से अनुमति ले लें तो मिल सकती है।

मौलवी साहिब ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम की सेवा में पत्र लिखा। उसका सार यह था कि दफ़्तर में 'चश्मा मसीही' की केवल बीस प्रतियाँ बची हैं और मुझे एक प्रति की आवश्यकता है। यदि उचित समझें तो कृपया एक प्रति मुझे दे दी जाए।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: "आप एक प्रति ले लें।" और उसी पत्र पर यह आदेश लिखकर अपने हस्ताक्षर कर दिए।

(संदर्भ: रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 3, पृष्ठ 479)

यहाँ एक ओर सहाबा की सच्चाई भी दिखाई देती है कि उन्होंने स्पष्ट बता दिया कि केवल इतनी प्रतियाँ बची हैं और मुझे एक चाहिए। दफ़्तर का नियम तो कुछ और है, लेकिन यदि कृपा हो जाए तो मिल सकती है। दूसरी ओर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दयालुता भी स्पष्ट होती है कि यद्यपि वे प्रतियाँ भविष्य की आवश्यकता के लिए सुरक्षित रखी गई थीं, फिर भी आपने माँगने वाले को निराश नहीं किया।

हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम के पास कभी-कभी पंडित मोहन लाल, जो उस समय एक बुद्धिमान युवक थे, पंडित लेखराम का कोई पत्र आदि लेकर आते थे। चूँकि पंडित मोहन लाल के परिवार का हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम के परिवार से बहुत पुराना संबंध था, इसलिए जब भी वे लौटते, आप उन्हें कभी खाली हाथ नहीं जाने देते थे। कभी फल, कभी बढ़िया शक्कर या कोई और उपहार अवश्य देते थे। उस समय बढ़िया शक्कर भी एक विशेष उपहार मानी जाती थी।

पंडित मोहन लाल, जिनके परिवार से हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु के भी पुराने मैत्री संबंध थे, उनसे उन दिनों की घटनाएँ सुनाते हुए हमेशा कहा करते थे:

"हज़रत साहिब मुझ पर बहुत कृपा करते थे। हमेशा मुस्कुराकर मिलते थे और कभी खाली हाथ नहीं जाने देते थे।

एक बार हज़रत साहिब ने मुझे बहुत अच्छे सेब दिए। मैं उन्हें लेकर गया। पंडित लेखराम की आदत थी कि जब मैं लौटता तो अवश्य पूछता कि क्या लाए हो? मैंने कहा कि सेब लाया हूँ। उसने लालच भरी नज़र से देखकर कहा, 'लाओ, मैं भी खाऊँ।'

मैंने हँसते हुए कहा, 'दुश्मन के घर की चीज़ तुम्हें नहीं खानी चाहिए। तुम तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बड़े विरोधी हो, फिर उनके घर की चीज़ क्यों माँग रहे हो?'

इतना सुनते ही उसने मेरे हाथ से सेब छीन लिया और खाने लगा।"

वे कहते हैं कि उन्होंने हमेशा हज़रत साहिब अलैहिस्सलाम से प्रेम, दया और उदारता ही देखी।

(संदर्भ: हयात-ए-अहमद, याक़ूब अली इरफ़ानी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, जिल्द 2, भाग 2, पृष्ठ 186–187)

हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब बयान करते हैं:

"हुज़ूर के पास कस्तूरी (मुश्क) रहती थी। एक बार मैंने निवेदन किया कि हुज़ूर! मुझे कुछ कस्तूरी चाहिए। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने डिब्बी मेरे सामने रख दी और फ़रमाया कि इसमें से जितनी चाहो ले लो। मैंने उसमें से थोड़ा-सा उठाया। आप मुस्कुराए और फ़रमाया, 'यह तो कुछ भी नहीं है।' फिर आपने स्वयं लगभग सवा से डेढ़ तोला कस्तूरी मुझे दे दी।"

(असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 213)

यह बहुत क़ीमती वस्तु है। आज भी कस्तूरी बहुत महँगी होती है और दवाइयों आदि में उपयोग की जाती है। लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को किसी वस्तु के महँगे होने की परवाह नहीं थी। आप तो अपने श्रेष्ठ चरित्र और उच्च नैतिकता का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते थे।

मित्रों के प्रति प्रेम और उदारता की एक घटना

हकीम मुफ़्ती फ़ज़्लुर्रहमान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

मेरी पत्नी के यहाँ बच्चे का जन्म हुआ। सातवें दिन, मग़रिब के समय, मेरी पत्नी में ऐंठन (तशन्नुज) के लक्षण दिखाई देने लगे। उन दिनों यह बीमारी फैली हुई थी, इसलिए मुझे बहुत चिंता हुई।

मैं मग़रिब की नमाज़ के बाद दौड़कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में गया और पूरी स्थिति बताई।

आपने फ़रमाया: "यह तो बहुत ख़तरनाक बीमारी की शुरुआत है। तुम तुरंत उसे दस रत्ती हींग दे दो।"

फिर फ़रमाया, "डेढ़ घंटे बाद मुझे इसकी सूचना देना।"

मैं इशा की नमाज़ के बाद फिर उपस्थित हुआ और बताया कि बीमारी बढ़ गई है।

आपने फ़रमाया: "उसे दस रत्ती कुनैन दे दो। एक घंटे बाद फिर मुझे बताना। और यह मत समझना कि मैं सो गया हूँ। बेझिझक पुरुषों वाली सीढ़ियों से आवाज़ देना।"

एक घंटे बाद मैं फिर गया और बताया कि कोई लाभ नहीं हुआ।

आपने फ़रमाया: "उसे दस रत्ती कस्तूरी दे दो।"

मैंने निवेदन किया, "हुज़ूर! इस समय कस्तूरी कहाँ से लाऊँ?"

हुज़ूर अलैहिस्सलाम स्वयं एक मुट्ठी भर कस्तूरी लेकर आए और फ़रमाया:

"इसमें दस रत्ती तो होगी।"

मैंने कहा, "हुज़ूर! यह तो इससे कहीं अधिक है।"

आपने फ़रमाया: "ले जाओ, आगे भी काम आएगी।"

मैं वह कस्तूरी ले गया और दस रत्ती रोगिणी को दे दी। एक घंटे बाद फिर उपस्थित हुआ और बताया कि बीमारी और बढ़ गई है।

तब आपने फ़रमाया: "अब उसे दस तोला कैस्टर ऑयल (अरंडी का तेल) दे दो।"

इस प्रकार आप अलग-अलग दवाइयाँ बताते रहे। मैंने जाकर दस तोला कैस्टर ऑयल दे दिया। इसके बाद उसे बहुत तेज़ उल्टी हुई। इस बीमारी में उल्टी अंतिम अवस्था मानी जाती थी। उल्टी के बाद उसकी साँस उखड़ने लगी, गर्दन पीछे की ओर खिंच गई, आँखों की रोशनी चली गई और उसकी ज़ुबान बंद हो गई।

मैं फिर दौड़कर सीढ़ियों पर पहुँचा। मेरी आवाज़ सुनकर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने स्वयं दरवाज़ा खोला और फ़रमाया:

"क्या बात है?" मैंने निवेदन किया:

"अब हालत बहुत नाज़ुक हो गई है। साँस उखड़ रही है, गर्दन पीछे खिंच गई है। यह तशन्नुज (Meningitis) की स्थिति है। आँखों में रोशनी नहीं रही और ज़ुबान भी बंद हो गई है।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"दुनिया के जितने भी उपाय थे, वे सब हम कर चुके। अब एक उपाय बाकी है, और वह दुआ है। तुम जाओ, मैं उस समय तक दुआ करता रहूँगा, जब तक वह स्वस्थ न हो जाए।"

वे कहते हैं कि यह सुनकर मैं वापस लौट आया और अपनी पत्नी से कहा:

"अब तुम्हें किस बात की चिंता है? अब तो ठेकेदार ने स्वयं ही ठेका ले लिया है।"

वे कहते हैं कि उस समय रात के दो बज चुके थे। मैं घर आया और पत्नी को उसी हालत में छोड़कर दूसरे कमरे में चारपाई पर जाकर सो गया, क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि "अब मैं दुआ करूँगा।" इसलिए मैंने सोचा कि अब मेरा कोई काम नहीं रहा।

वे कहते हैं कि सुबह किसी बर्तन की आवाज़ से मेरी आँख खुली। मैंने देखा कि मेरी चारपाई के पैरों की ओर मेरी पत्नी कुछ बर्तन ठीक कर रही थी। मैंने पूछा, "अब कैसी तबीयत है?"

वह कहने लगी: "आप तो सो रहे थे और मुझे दो घंटे बाद अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से पूरी तरह ठीक कर दिया।" अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

(संदर्भ: सीरत-ए-अहमद, क़ुदरतुल्लाह सनौरी साहिब, पृष्ठ 170–172)

इस घटना से मित्रों के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रेम और उदारता, दोनों के सर्वोच्च स्तर का पता चलता है।

हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि क़ादियान में निहाल सिंह नाम का एक बांगड़ू (मूर्ख) जाट रहता था। युवावस्था में वह किसी फ़ौज में नौकरी कर चुका था और पेंशन पाता था। उसका घर ख़ान बहादुर मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब के दीवानख़ाने की दीवार से लगा हुआ था।

वह जमाअत का बहुत बड़ा विरोधी था। उसी की प्रेरणा से हज़रत हकीमुल उम्मत, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल हज़रत ख़लीफ़ा नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हु और कुछ अन्य अहमदियों के विरुद्ध एक गंभीर झूठा फ़ौजदारी मुक़दमा दर्ज कराया गया था। वह हमेशा दूसरे लोगों के साथ मिलकर अहमदियों को परेशान करता रहता था और गालियाँ देना तो उसका रोज़ का काम था।

इन्हीं दिनों, जब मुक़दमे चल रहे थे, उसके भतीजे संता सिंह की पत्नी के लिए कस्तूरी (मुश्क) की आवश्यकता पड़ी। उस समय न केवल यह कि कहीं कस्तूरी मिल नहीं रही थी, बल्कि वह बहुत महँगी भी थी। ऐसी स्थिति में वही विरोधी व्यक्ति हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दरवाज़े पर आया और कस्तूरी माँगी।

जैसे ही उसने आवाज़ दी, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तुरंत बाहर आए और उसे ज़रा भी प्रतीक्षा नहीं कराई। उसकी बात सुनते ही आप अंदर गए और फ़रमाया: "ठहरो, मैं अभी लाता हूँ।" फिर आप लगभग आधा तोला कस्तूरी लाकर उसे दे दी।

(संदर्भ: सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम, हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, भाग द्वितीय, पृष्ठ 295–296; फ़िरोज़-उल-लुग़ात, पृष्ठ 175)

हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि जब इस देश में

प्लेग फैला, तो अल्लाह तआला की वह्य (ईश्वरीय मार्गदर्शन) और ज्ञान के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक दवा तैयार करनी शुरू की, जिसका नाम आपने "तिरयाक़-ए-इलाही" रखा।

इस दवा का कोई निश्चित नुस्ख़ा नहीं था। अल्लाह तआला की गुप्त वह्य के अनुसार जिस प्रकार मार्गदर्शन मिलता, उसी प्रकार उसके घटक तैयार किए जाते। सामान्य चिकित्सा पद्धति के प्रचलित नियमों की परवाह नहीं की जाती थी। दवा के घटकों का वज़न और मात्रा भी उसी ईश्वरीय मार्गदर्शन के अनुसार निर्धारित की जाती थी। जितनी मात्रा डालने का मार्गदर्शन मिलता, उतनी ही डाली जाती।

इस दवा में हज़ारों रुपये मूल्य के जवाहरात और अनेक महँगी औषधियाँ मिलाई गई थीं।

जब यह दवा तैयार हो गई, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे बड़े खुले दिल से लोगों में बाँटा। आपने एक हब्बा (एक दाना) तक का मूल्य किसी से नहीं लिया। बल्कि बाहर से माँगने वालों को भी अपने ख़र्च पर रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा यह दवा भेजते थे।

डॉक्टर सादिक़ साहिब ने एक बार बताया कि किसी व्यक्ति ने दो-तीन माशा तिरयाक़ माँगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे एक डिब्बी में बहुत अधिक मात्रा भरकर रजिस्टर्ड डाक से भेज दिया।

इरफ़ानी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि जब मैंने भी निवेदन किया, तो मुझे भी बहुत बड़ी मात्रा में यह दवा प्रदान की गई।

केवल तिरयाक़ के साथ ही नहीं, बल्कि दूसरी दवाइयों के मामले में भी आपका यही तरीका था। कई बार तो आप पूरी की पूरी शीशी ही दे देते थे। कई अवसरों पर आपने अपने कट्टर विरोधियों को भी बहुत महँगी और उत्तम कस्तूरी दे दी, जिसका एक प्रसंग पहले भी आ चुका है।

(संदर्भ: सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम, हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, भाग द्वितीय, पृष्ठ 309–310)

हज़रत शैख़ मुहम्मद नसीब साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

"एक बार हमें कस्तूरी की आवश्यकता पड़ी। उन दिनों क़ादियान में उसका मिलना लगभग असंभव था। हमने हज़रत साहिब अलैहिस्सलाम की सेवा में निवेदन किया। आपने आवश्यकता से कहीं अधिक कस्तूरी प्रदान कर दी।"

(रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 5, पृष्ठ 446)

मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथलवी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

"एक मित्र ने बहुत मेहनत और अधिक ख़र्च करके किसी व्यक्ति से एक कुश्ता (विशेष आयुर्वेदिक/यूनानी औषधि) का नुस्ख़ा प्राप्त किया। कुश्ता तैयार करके वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में लाया और उसका नुस्ख़ा भी दे दिया।

एक दूसरे मित्र ने मुझसे कहा कि वह नुस्ख़ा किसी तरह प्राप्त किया जाए, लेकिन वह मित्र किसी को नहीं बताते थे।

मैं हज़रत साहिब अलैहिस्सलाम की सेवा में गया और निवेदन किया कि फलाँ मित्र ने कोई कुश्ता आपको दिया है।

आपने फ़रमाया: 'वह शीशी रखी है, उसे ले लो।'

मैंने निवेदन किया: 'उसका नुस्ख़ा भी?' आपने फ़रमाया: 'वह भी वहीं रखा है।'

मैं वह कुश्ता और उसका नुस्ख़ा दोनों लेकर आया और उस मित्र को दिखाकर कहा कि देखो, तुम तो नहीं बताते थे, लेकिन मैं ले आया हूँ।

वह मित्र हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में गया और निवेदन किया कि हुज़ूर! आपने वह सब दे दिया है।

आपने फ़रमाया: 'वह हमसे माँगने आया था, इसलिए हमने दे दिया।' फिर आपने मुझसे यह भी फ़रमाया:

'मिर्ज़ा साहिब (अर्थात् मेरे स्वर्गीय पिता) की बीयाज़ (नुस्ख़ों की डायरी) भी हमारे पास है। यदि तुम्हें नुस्ख़े चाहिएँ तो वह भी ले लो। उसमें बहुत अच्छे नुस्ख़े हैं।'

लेकिन बाद में मुझे वह डायरी लेने का ध्यान ही नहीं रहा, जबकि हुज़ूर अलैहिस्सलाम स्वयं देना चाहते थे।

(असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 214–215)

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु अपने एक पत्र में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में लिखते हैं:

"गर्भावस्था के कारण कुछ समय से मेरे घर में ऐसी परेशानी है कि घर में खाना तैयार नहीं हो पाता। रोटी तो तंदूर से बनवा ली जाती है, लेकिन सब्ज़ी (सालन) बनाने में कठिनाई है। इसलिए विनम्र निवेदन है कि कुछ समय तक लंगर से सालन भिजवा दिया जाए।"

इसके उत्तर में हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने लंगर के प्रभारी मियाँ नजमुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखकर निर्देश दिया:

"मुफ़्ती साहिब को दिन में दो समय लंगर से अच्छा सालन दिया जाए। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए।"

(संदर्भ: ज़िक्र-ए-हबीब, हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 281)

हज़रत मुहम्मद इस्माईल साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए नसीबीन एक प्रतिनिधिमंडल भेजने का इरादा किया।

इस दल में मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब, मौलवी क़ुतुबुद्दीन साहिब और तीसरे सदस्य मेरे पिता मियाँ जमालुद्दीन साहिब थे। इनका चयन चिट्ठी डालकर किया गया था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कपड़ों आदि की तैयारी के लिए तीनों को पचास-पचास रुपये दिए और फिर विदाई सभा भी आयोजित की।

लेकिन बाद में कुछ कारणों से यह प्रतिनिधिमंडल नहीं भेजा गया।

जब यात्रा रद्द हो गई, तो मेरे पिता ने वे पचास रुपये वापस हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में प्रस्तुत किए।

आपने फ़रमाया: "जो चीज़ हम किसी को दे देते हैं, उसे वापस नहीं लेते।" जब मेरे पिता घर लौटे, तो उन्होंने मुझे यह घटना सुनाई।

(संदर्भ: रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 140)

हज़रत मलिक ग़ुलाम हुसैन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि यह 1894 या 1895 के जलसा सालाना की बात है। सियालकोट के हज़रत हिसामुद्दीन साहिब स्वादिष्ट भोजन बनाने और खाने के बहुत शौक़ीन थे। वे उस समय जलसे में आए हुए थे।

उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में शब-दीग की बहुत प्रशंसा की और कहा कि हुज़ूर! शब-दीग बहुत स्वादिष्ट बनती है। इसमें विभिन्न प्रकार का मांस, फल और सब्ज़ियाँ डाली जाती हैं और इसे पूरी रात पकाया जाता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझे बुलाकर फ़रमाया:

"शाह साहिब जो कुछ पसंद करें और जितनी चीज़ें चाहें, उनके लिए उपलब्ध करा दो।"

इसलिए यहाँ से मांस लिया गया और शलजम बटाला से मँगवाए गए। शाम के समय लगभग चार बड़ी देगें चढ़ा दी गईं। चावल भी उस समय की प्रसिद्ध दुकान से लगभग ढाई मन अच्छे दर्जे के ख़रीदे गए। सुबह मेहमानों को सैयद हिसामुद्दीन साहिब की इच्छा के अनुसार भोजन कराया गया।

(संदर्भ: रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 30)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे लिखकर दिया कि एक बार जलसा सालाना के अवसर पर ख़र्च के लिए धन समाप्त हो गया।

उन दिनों जलसा सालाना के लिए नियमित चंदे की व्यवस्था नहीं थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम स्वयं अपने पास से सारा ख़र्च करते थे।

लंगर के प्रभारी मीर नासिर नवाब साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर निवेदन किया:

"आज रात मेहमानों के भोजन का कोई सामान नहीं है। सारा ख़र्च समाप्त हो गया है।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"बेगम साहिबा (हज़रत अम्माँ जान रज़ियल्लाहु अन्हा) से ऐसा कोई गहना ले लो, जिससे काम चल सके। उसे बेचकर या गिरवी रखकर मेहमानों के भोजन का प्रबंध कर लो।"

इसलिए गहना बेच दिया गया या गिरवी रख दिया गया और मीर साहिब रुपये लेकर आए तथा मेहमानों के भोजन का प्रबंध कर दिया।

दो दिन बाद फिर मीर साहिब ने रात में, मेरी उपस्थिति में, निवेदन किया:

"कल के लिए भी कुछ नहीं बचा।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"जहाँ तक दिखाई देने वाले साधनों का संबंध था, हमने अपना पूरा प्रयास कर दिया। जो कुछ हमारे पास था, सब दे दिया। अब हमें चिंता करने की आवश्यकता

नहीं। ये लोग अल्लाह तआला के मेहमान हैं, जो उसकी ख़ातिर आए हैं। अब अल्लाह तआला स्वयं इनके लिए प्रबंध करेगा।"

वे कहते हैं कि अगले दिन सुबह लगभग आठ-नौ बजे जब डाकिया आया, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मीर साहिब और मुझे बुलाया। डाकिए के हाथ में लगभग दस-पंद्रह मनीऑर्डर थे, जो अलग-अलग स्थानों से आए थे। उनमें पचास-पचास और सौ-सौ रुपये भेजे गए थे।

उन पर लिखा था: "हम जलसे में उपस्थित नहीं हो सकते। इसलिए मेहमानों के ख़र्च के लिए यह राशि भेज रहे हैं।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वे मनीऑर्डर प्राप्त किए और फिर तवक्कुल (अल्लाह पर पूर्ण भरोसा) के विषय में भाषण दिया।

उस समय वहाँ कुछ और लोग भी मौजूद थे।

आपने फ़रमाया: "जिस प्रकार एक दुनियादार व्यक्ति को अपनी तिजोरी में रखे धन पर भरोसा होता है कि जब चाहेगा निकाल लेगा, उससे कहीं अधिक भरोसा अल्लाह पर भरोसा करने वालों को अल्लाह तआला पर होता है। और वास्तव में ऐसा ही होता है कि जब आवश्यकता पड़ती है, तो अल्लाह तआला तुरंत प्रबंध कर देता है।"

(संदर्भ: सीरतुल महदी, जिल्द 2, भाग 4, पृष्ठ 97–98, रिवायत संख्या 1124)

इस प्रकार जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "ये अल्लाह तआला के मेहमान हैं और उसकी ख़ातिर आए हैं," तो निश्चित रूप से आपने दुआ भी की होगी और आपका तवक्कुल (अल्लाह पर पूरा भरोसा) भी पूर्ण था। फिर अल्लाह तआला ने स्वयं प्रबंध कर दिया।

हज़रत मियाँ रहमतुल्लाह साहिब बयान करते हैं: "हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि अकाल और महामारी एक साथ आ रहे हैं, फिर भी लोग तौबा नहीं करते। लोग भूख से मर जाते हैं।"

इसके तीन वर्ष बाद देश में भयंकर प्लेग फैल गई। अकाल के दिनों में हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि हदीसों में इसका उल्लेख है कि मसीह मौऊद के समय अकाल पड़ेगा। इस प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी और अल्लाह तआला का वादा पूरा हुआ।

दूसरी ओर आपने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को आदेश दिया कि जितना संभव हो सके, अनाज पहले से खरीदकर रख लिया जाए। उस समय लंगर का पूरा प्रबंध स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ में था। अकाल का ख़तरा था, इसलिए आपने पहले से अनाज इकट्ठा करने की व्यवस्था की और यह कार्य हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु को सौंपा।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम के आदेश पर मौलवी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे लंगरख़ाने के लिए तीस बोरी अनाज खरीदा। चंदे की कमी थी, इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने घर में मौजूद जितने भी गहने थे, सब बेच दिए और सात सौ रुपये गेहूँ खरीदने के लिए मौलवी साहिब को दिए। उस समय सात सौ रुपये बहुत बड़ी राशि होती थी।

मौलवी साहिब ने मियाँ नजमुद्दीन साहिब मरहूम को गाँवों में गेहूँ खरीदने के लिए भेजा। उनके साथ मिर्ज़ा इस्माईल साहिब भी गए। अनाज खरीदा गया।

इसी दौरान बीकानेर (भारत के वर्तमान राजस्थान राज्य का एक क्षेत्र) में भीषण अकाल पड़ा और वहाँ से बहुत से लोग उजड़कर हमारे क्षेत्र में आ गए। चारों ओर से लोगों की आवाज़ आती थी—"रोटी, रोटी!"

तब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आदेश दिया कि लंगर में हर समय आटा गूँथा जाए और रोटियाँ तैयार रहें। आपने मियाँ नजमुद्दीन साहिब से फ़रमाया कि जो भी रोटी माँगने आए, उसे रोटी दी जाए और कोई भी व्यक्ति खाली हाथ वापस न जाए।

कुछ ही दिनों में खरीदा हुआ सारा अनाज समाप्त हो गया। तब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक भाषण दिया, जिसके शब्द ये थे:

"यह एक अस्थायी स्थिति है। न तो हमेशा ऐसी कुर्बानी करनी पड़ती है और न ही हमेशा ऐसा सवाब मिलता है। ये दिन ईमान वालों के लिए विशेष हैं। अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अल्लाह तआला अपने मित्रों को कुर्बानी की तौफ़ीक़ दे।"

इस भाषण के बाद कुछ रुपये वहीं एकत्र हो गए और कुछ बाहर से भी आए। फिर अनाज खरीदा गया। इस प्रकार अकाल के दिनों में यह सिलसिला चलता रहा। जो भी अकाल-पीड़ित लोग आते, उन्हें तुरंत भोजन उपलब्ध कराया जाता।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे: "मैंने अमुक अख़बार में पढ़ा कि किसी देश में इतने बच्चे भूख से मर गए और इतने लोग मर गए। अनाज नहीं मिल रहा। यह अल्लाह तआला का बहुत बड़ा प्रकोप है कि लोगों को अनाज नहीं मिल रहा।"

आप बार-बार दुआ करते कि अल्लाह तआला रहम करे। आप बड़ी चिंता के साथ मियाँ नजमुद्दीन साहिब और मौलवी साहिब से अनाज की स्थिति के बारे में पूछते रहते थे।

(संदर्भ: रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 72–73; बीकानेर: विकिपीडिया)

आज भी दुनिया के कुछ देशों में यही हालात हैं। कहीं अकाल है, कहीं अनाज नहीं मिलता और कहीं महँगाई इतनी है कि लोग खरीद नहीं सकते। ग़रीबी और भूख से लोग मर रहे हैं। अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है कि जहाँ-जहाँ ऐसी जानकारी मिलती है, वहाँ जमाअत उनकी सहायता के लिए धन भी भेजती है और उनकी आवश्यकताएँ भी पूरी करती है। इसमें जमाअत के लोग भी बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। अल्लाह तआला उन्हें और अधिक तौफ़ीक़ दे कि वे इन ग़रीबों और अकाल-पीड़ित लोगों की सहायता के लिए और भी अधिक प्रयास करते रहें।

हज़रत क़ाज़ी नूर मुहम्मद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि यह घटना हज़रत अमीरुल मोमिनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु के बयान की है। वे कहते हैं कि मैं उनका सहपाठी था और मुझे रात में दारुल मसीह में उनके साथ पढ़ने का अवसर मिलता था। हज़रत मौलवी शेर अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु हमें पढ़ाते थे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम महिलाओं के हिस्से में जाकर भाषण फ़रमाया करते थे। उस समय भाषण की आवाज़ हमारे कानों तक अच्छी तरह पहुँच जाती थी, लेकिन अफ़सोस कि अब उसमें से कुछ याद नहीं।

लंगर के लिए आटा लाने का काम प्रायः मुल्ला अहमद नूर किया करते थे। जब गधे पर आटा लाया जाता, तो मुझे आटे की बोरी उठाकर दारुल मसीह तक पहुँचाने का अवसर मिलता था।

एक बार मैंने देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने कुर्ते की झोली में बहुत-से रुपये लाए और बिना गिने मुल्ला अहमद नूर की झोली में डाल दिए, ताकि वे लंगरख़ाने के लिए आवश्यक सामान खरीद सकें और लंगर का प्रबंध चलता रहे।

(संदर्भ: रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 75)

हज़रत मियाँ चिरागुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

"एक बार मेरा गला इस प्रकार बंद हो गया कि आवाज़ निकलनी बंद हो गई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि चिराग़ के गले का इलाज करें। इसकी आवाज़ क्यों नहीं निकलती?"

मौलवी साहिब इलाज करते रहे, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ।

बाद में एक अवसर पर डॉक्टर मुहम्मद हुसैन शाह साहिब, डॉक्टर याक़ूब बेग साहिब और डॉक्टर बौड़े ख़ान साहिब (लाहौर) एक साथ उपस्थित थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनके सामने भी यह बात कही कि इस लड़के की आवाज़ क्यों बंद है?

इस पर डॉक्टर याक़ूब बेग साहिब ने मेरा गला देखकर कहा:

"यदि हुज़ूर अनुमति दें तो इसके गले को अंदर से काट दिया जाए (संभवतः टॉन्सिल का ऑपरेशन), इससे इसकी आवाज़ खुल जाएगी।"

इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कुछ नहीं कहा और चुप रहे।

कुछ दिनों बाद आपने मुझसे फ़रमाया:

"चिराग़! अब हम तुम्हारा इलाज करेंगे। तुम्हारे लिए एक नुस्ख़ा तैयार करेंगे।"

अल्लाह की कुदरत देखिए कि उसी दिन अमृतसर का एक अत्तार आक (मदार) के पत्तों का अचार लेकर आया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे खोलकर देखा और फ़रमाया: "यही तुम्हारा इलाज है।"

खाने के समय आप रोटी पर उस अचार के दो-तीन पत्ते रखकर मुझे देते थे। वह बहुत स्वादिष्ट था और हुज़ूर अलैहिस्सलाम स्वयं भी उसे खाते थे।

वे कहते हैं:

"उससे मुझे आराम आ गया। तब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वह पूरा

मर्तबान मुझे दे दिया और फ़रमाया कि इसे तुम ही खा लो। मैंने उसे खाया और मुझे पूरी तरह स्वास्थ्य लाभ हो गया।"

(रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 72)

हज़रत मिर्ज़ा अफ़ज़ल बेग साहिब बयान करते हैं:

मैं पहली बार 1898 में क़ादियान आया। मेरे पिता मिर्ज़ा फ़ज़्ल बेग साहिब, जो अदालत में मुख़्तार थे, उन्होंने मुझे तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल में दाख़िल कराया। उस समय बोर्डिंग में कुछ ही विद्यार्थी थे और उनके भोजन की व्यवस्था लंगरख़ाने से होती थी।

भोजन के संबंध में कुछ शिकायत हुई तो मेरे पिता ने इसका उल्लेख हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किया कि बच्चों को भोजन में कठिनाई होती है।

इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बड़े स्नेह से फ़रमाया:

"अब बच्चों का भोजन मेरे घर से भेजा जाएगा।"

इसलिए कई महीनों तक हमारा भोजन हुज़ूर अलैहिस्सलाम के अपने घर से आता रहा और कभी-कभी आम तथा मिठाई भी भेजी जाती थी।

(रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 167)

ख़्वाजा अब्दुर्रहमान साहिब कश्मीरी ने हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को बताया कि हाफ़िज़ हामिद अली साहिब मरहूम कहा करते थे:

"जब भी कहीं से हुज़ूर अलैहिस्सलाम के पास रुपये आते, तो आप मुझे बुलाकर बिना गिने रुपये दे देते और फ़रमाते 'इस समय रुपये ले लो, पता नहीं फिर कब हाथ में आएँ।'"

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं:

"मैं निवेदन करता हूँ कि हाफ़िज़ हामिद अली साहिब मरहूम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विशेष सेवक थे। घर की आवश्यकताओं और मेहमानों की मेहमाननवाज़ी के लिए उन्हें रुपये दिए जाते थे।"

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, भाग 3, पृष्ठ 529–530, रिवायत 530)

हज़रत ख़ान साहिब सैयद ग़ुलाम हुसैन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

"एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझे क़ादियान से बटाला भेजा कि रेल से आया हुआ एक पार्सल ले आओ। उसकी बिल्टी आई है। आपने मुझे पाँच रुपये भी दिए।"

वह पार्सल अंगूरों की टोकरी थी, जिस पर केवल चार आने का ख़र्च लगा।

जब मैं वह टोकरी लेकर आया, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने टोकरी का टाट फाड़ा और दोनों हाथों से अंगूर निकालकर सबसे पहले मुझे दिए और फ़रमाया:

"यह तुम्हारा हिस्सा है।" जब मैंने बचे हुए लगभग पौने पाँच रुपये लौटाने चाहे, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम टोकरी उठाकर अंदर ले गए और फ़रमाया:

"हम अपने मित्रों से हिसाब नहीं रखते।" उस समय मेरी आयु पंद्रह वर्ष थी।

(संदर्भ: रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 5, पृष्ठ 120)

हज़रत मुंशी क़ाज़ी महबूब आलम साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मौलवी मुहम्मद अली साहिब और ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब पेशावर में साझेदारी में वकालत करते थे।

बाद में मौलवी मुहम्मद अली साहिब क़ादियान आ गए और ख़्वाजा साहिब वहीं रहे।

जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर मुक़दमे चल रहे थे संभवतः करमुद्दीन वाले मुक़दमे—तो उनकी पैरवी के लिए ख़्वाजा साहिब पेशावर से आए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मस्जिद मुबारक में तशरीफ़ लाए। ख़्वाजा साहिब ने अत्यंत भावुक होकर निवेदन किया:

"हुज़ूर! अल्लाह और उसका रसूल ही जानते हैं कि मैं किस कठिनाई से यहाँ पहुँचा हूँ। पत्नी के गहने गिरवी रखकर किराए के पैसे जुटाए हैं। आर्थिक स्थिति बहुत ख़राब है।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: "ख़्वाजा साहिब! आपको रुपयों की आवश्यकता है? आइए।"

फिर आप अंदर गए और ख़्वाजा साहिब भी साथ गए। आपने एक संदूक खोला और उसमें से दो-तीन मुट्ठी सिक्के भरकर उनकी झोली में डाल दिए और फ़रमाया:

"ख़्वाजा साहिब! बस, या और चाहिए?" उन्होंने कहा: "बस हुज़ूर! अब तो बहुत हो गए।"

बाद में ख़्वाजा साहिब ने मस्जिद मुबारक में वे रुपये गिने, तो वे लगभग तीन सौ रुपये निकले। अगले दिन वे गुरदासपुर चले गए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वे रुपये बिना गिने ही उनकी झोली में डाल दिए थे।

हज़रत मुंशी क़ाज़ी महबूब आलम साहिब आगे कहते हैं:

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह सामान्य आदत थी कि वे अपने सेवकों को भी रुपये गिनकर नहीं देते थे। उन्हें उन पर पूरा विश्वास होता था। जितना समय मुझे उनके साथ रहने का अवसर मिला, मैंने कभी नहीं देखा कि उन्होंने किसी सेवक से हिसाब माँगा हो। बल्कि जब भी कोई माँगता, वे उसे दे देते थे।"

(संदर्भ: रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 277)

हज़रत शेख याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु ख़्वाजा साहिब पर की गई इस कृपा का उल्लेख करते हुए लिखते हैं:

"ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब, जो आज सिलसिले से अलग हो चुके हैं (अर्थात जमाअत से अलग हो गए हैं) और अपने उपकारी पिता की संतान से बैर और दुश्मनी रखते हैं (अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन पर बहुत उपकार किए थे और उनकी संतान हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु से भी उन्हें दुश्मनी थी), वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कृपाओं, उदारता और दानशीलता के सबसे बड़े अनुभव रखने वालों में से हैं।"

उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कृपाओं का बहुत अनुभव था। उन्होंने आपसे बेहिसाब धन लिया, लेकिन लेने के बाद भी कभी इसका स्वीकार नहीं किया और न ही इस उपकार के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। बल्कि वे हमेशा अपनी सेवाओं का बखान करते रहे और यही कहते रहे कि मैं सिलसिले की बहुत बड़ी सेवा कर रहा हूँ।

शेख याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं:

"मैं इसे उपकार का बदला बुराई से देना और एहसान भूल जाना समझता हूँ।"

जब गुरदासपुर में मौलवी करमुद्दीन के मुक़दमे चल रहे थे, तो एक बार मुक़दमे के दौरान ख़्वाजा साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपने घर पेशावर से आया हुआ एक पत्र दिखाया, जिसमें घर के ख़र्च की तंगी का उल्लेख था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तुरंत उन्हें पाँच सौ रुपये नकद दे दिए। इसके बाद आप उन्हें हर महीने एक सौ रुपये मासिक भी देते रहे।

विशेष रूप से जमाअत के लोगों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आह्वान पर मुक़दमे के ख़र्च के लिए बहुत बड़ी राशि भेजी थी, जो ख़्वाजा साहिब के पास रहती थी। लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कभी उनका हिसाब नहीं माँगा।

इस प्रकार की आर्थिक सहायता और उदारता के अलावा, जब हज़रत साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहिब शहीद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए अफ़ग़ानी शैली का एक बहुत कीमती कोट लाए, तो ख़्वाजा साहिब ने निवेदन किया:

"हुज़ूर! यह कोट मुझे दे दीजिए, ताकि मैं इसे पहनकर अदालत में जाया करूँ और इसकी बरकत से विपक्ष के वकीलों और अदालत में मेरा रौब बने।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मुस्कुरा दिए और वह सुंदर, कढ़ाईदार, कीमती चोग़ा उन्हें दे दिया।

(संदर्भ: सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम, हज़रत शेख याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, भाग तृतीय, पृष्ठ 311–312)

पिछले ख़ुत्बे में भी इसका उल्लेख हुआ था कि एक बहुत बढ़िया चमड़े (लेदर) का कोट लाया गया था। आज भी अच्छे लेदर के कपड़े बहुत कीमती माने जाते हैं और उस समय भी ऐसा ही था। वह कोट भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़्वाजा साहिब के माँगने पर उन्हें दे दिया।

हज़रत शेख हामिद अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

"आख़िरी समय तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कभी मुझसे हिसाब नहीं माँगा और न कभी नाराज़ हुए।"

एक बार मैं लाहौर गया। हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने सात सौ रुपये की हुंडी (या मनी ऑर्डर/वाउचर) भेजी थी, जिसे लेकर मैं गया। मैंने कुछ सामान ख़रीदा और लगभग पचास रुपये बचाकर वापस लाया।

मैंने उनका हिसाब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दिया तो आपने फ़रमाया: "मैंने कब तुमसे हिसाब माँगा है?"

(संदर्भ: सीरत अहमद, कुदरतुल्लाह सनौरी साहिब, पृष्ठ 59)

हज़रत शेख अहमदुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझे आदेश दिया कि अमृतसर जाकर मियाँ नबी बख़्श साहिब रफ़ूगर को यह पत्र देना और जो सामान वे खरीदकर दें, उसे लेकर अगले दिन तक वापस आ जाना।

दूसरे दिन मुझे लौटने में कुछ देर हो गई।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक सेवक मियाँ करमदाद साहिब थे। आपने उनसे कहा:

"जल्दी जाओ। मैंने अहमदुद्दीन को अमृतसर भेजा था, वह अभी तक वापस नहीं आया। जाकर पता करो कि सब ख़ैरियत तो है।"

रास्ते में मेरी मुलाक़ात मियाँ करमदाद साहिब से हो गई। उन्होंने कहा:

"हज़रत साहिब तुम्हारी बहुत चिंता कर रहे हैं।"

जब मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में पहुँचा तो सबसे पहले आपने पूछा: "आपको कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई?" मैंने अर्ज़ किया, "हुज़ूर! कोई तकलीफ़ नहीं हुई।"

वे कहते हैं कि इस प्रकार मेरा हाल पूछने से मेरा दिल खुशी से भर गया कि हज़रत ने मेरा हाल पूछा।

मैंने सामान का हिसाब और बचे हुए पैसे लौटाने चाहे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पूछा: "यह काग़ज़ कैसा है?"

मैंने आदरपूर्वक कहा, "हुज़ूर! यह सामान का हिसाब है और ये बचे हुए पैसे हैं।" आपने बड़े प्रेम से फ़रमाया:

"हमारा और तुम्हारा क्या हिसाब? ये पैसे तुम अपनी ज़रूरत पर ख़र्च कर लो।"

वे कहते हैं, "मैं बहुत प्रसन्न हुआ।"

(संदर्भ: रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 95–96)

हज़रत शेख याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं:

"हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कुछ ऋण लिया। जब उन्होंने वह राशि वापस भेजी तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे स्वीकार नहीं किया और वापस भेजते हुए फ़रमाया:

'क्या आप हमारे रुपये को अपने रुपये से अलग समझते हैं?'"

(संदर्भ: सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम, भाग तृतीय, पृष्ठ 307)

हज़रत शेख याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु ही लिखते हैं:

"जब से हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने अपने मिशन का एलान किया और लोगों को यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ने आपको यह शुभ समाचार दिया है कि 'बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत तलाश करेंगे', तब से लोग सामान्य रूप से आपसे कपड़े माँगते थे। और आप कभी किसी को मना नहीं करते थे। कई बार ऐसी स्थिति हो जाती थी कि आपके शरीर पर केवल पहनने वाले कपड़े ही रह जाते थे, बाकी सब आप लोगों को दे देते थे।"

(संदर्भ: सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम, भाग द्वितीय, पृष्ठ 290)

हज़रत शेख याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं:

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मीर अब्बास अली साहिब को 'बराहीन-ए-अहमदिया' की बिक्री से प्राप्त राशि अपने ख़र्च में इस्तेमाल करने की अनुमति दे दी। यह आपकी विशाल उदारता और दानशीलता का एक छोटा-सा उदाहरण है।"

(संदर्भ: हयात-ए-अहमद, याक़ूब अली इरफ़ानी साहिब, जिल्द 2, भाग द्वितीय, पृष्ठ 200)

हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं:

"मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन साहिब और मिर्ज़ा इमामुद्दीन साहिब, यद्यपि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कट्टर विरोधी थे और रिश्तेदार भी थे, फिर भी जब कभी आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने कुछ माँगा, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनकी ज़रूरत पूरी कर दी।"

वे कहते हैं: "एक बार मेरी मौजूदगी में मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन साहिब ने लगभग पचास रुपये (या थोड़ा कम या ज़्यादा) माँगे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तुरंत हाफ़िज़ हामिद अली के हाथ उन्हें भिजवा दिए।"

(संदर्भ: असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 215–216)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे बयान किया कि अब्दुल मुही साहिब अरब ने एक दिन, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में, कहा:

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उदारता का क्या कहना!"

वे कहते हैं: "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवनकाल में मुझे कभी कोई कठिनाई नहीं हुई। जब भी कोई ज़रूरत होती, मैं बिना झिझक माँग लेता और हज़रत मेरी आवश्यकता से अधिक दे देते। कई बार बिना माँगे भी देते रहते थे।"

फिर वे कहते हैं:

"जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का वफ़ात हो गया, तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु, जबकि वे भी अपनी उदारता के लिए प्रसिद्ध थे, मेरी आवश्यकताओं को वैसे पूरा न कर सके। अंत में तंग आकर मैंने उन्हें पत्र लिखा कि आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा तो बन गए हैं, लेकिन मेरी ज़रूरतें पूरी करने में उनकी ख़िलाफ़त नहीं निभाई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेरे साथ इस प्रकार का व्यवहार किया करते थे।"

इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी सहायता की।

लेकिन वे कहते हैं: "ख़ुदा की क़सम! कहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और कहाँ यह! उनकी तुलना में यह कुछ भी नहीं।"

(संदर्भ: सीरतुल महदी, जिल्द 1, भाग 3, पृष्ठ 545, रिवायत 562)

एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के घर में एक ग़रीब महिला ने थोड़े-से चावल चुरा लिए। लोगों ने उसे देख लिया और शोर मच गया।

उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने कमरे में काम कर रहे थे। शोर सुनकर बाहर आए। आपने देखा कि एक बहुत ग़रीब और परेशान हाल महिला खड़ी है, जिसके हाथ में थोड़े-से चावलों की गठरी है।

जब आपको पूरी घटना का पता चला और आपने उसकी हालत देखी, तो आपका दिल पिघल गया।

आपने फ़रमाया: "यह भूखी और अत्यंत ग़रीब लगती है। इसे कुछ और चावल देकर विदा कर दो और अल्लाह तआला की तरह लोगों की कमियों पर पर्दा डालने की आदत अपनाओ।"

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु इस घटना के बाद लिखते हैं:

"कोई जल्दबाज़ व्यक्ति कह सकता है कि इससे चोरी करने का साहस बढ़ेगा, लेकिन समझदार लोग जानते हैं कि जब वह माल स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का था और लेने वाली एक भूखी तथा अत्यंत निर्धन महिला थी, तो यह चोरी की सहायता नहीं बल्कि वास्तव में गरीब को भोजन कराने (इतआम-ए-मिस्कीन) के अंतर्गत आता है।"

हदीसों से भी यह सिद्ध है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी ऐसे मामलों में, जब कोई अत्यंत ग़रीब व्यक्ति भूख से मजबूर होकर खाने की कोई चीज़ उठा लेता था, उसे चोर नहीं माना बल्कि उससे नर्मी और उदारता का व्यवहार किया।

(संदर्भ: सीरत तैय्यबा, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए., पृष्ठ 64–65)

ये हैं अपने आका हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पूर्ण अनुसरण के उदाहरण।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی عَبْدِکَ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ۔

अनुवाद: हे अल्लाह! मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर तथा अपने बंदे मसीह मौऊद पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमा, उन्हें बरकत दे और उन्हें सलामती प्रदान कर।

★ ★ ★

दुआ की दरख़्वास्त

जनाब सुहैल अहमद साहब अपने, अपने वालिदैन एवं समस्त परिवार के लिए जमाअत के सभी अहबाब से दुआ की दरख़्वास्त करते हैं।

अल्लाह तआला सबको अपनी हिफ़ाज़त में रखे, ईमान, सेहत, में बरकत अता फ़रमाए। आमीन।

जनाब सुहैल अहमद साहब
जमाअत: आद्रा | ज़िला: पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 जुलाई 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

आपकी सामान्य आदत यह थी कि जो कुछ भी आप किसी को देते थे, वह दिखावे के लिए नहीं होता था, बल्कि केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने और उसकी सृष्टि पर दया करने के भाव से होता था

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ.
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन-चरित्र का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि :

आप अलैहिस्सलाम के जीवन में उदारता और दान की एक और विशेषता भी दिखाई देती है, जो सिफ़ारिश और पैरवी के रूप में थी। कई बार आपकी सेवा में ऐसा कोई ज़रूरतमंद आता, जिसकी आवश्यकता पूरी करना आपके अधिकार में नहीं होता था, बल्कि उसका संबंध किसी दूसरे व्यक्ति से होता था। ऐसी स्थिति में भी आप इस बात का विशेष ध्यान रखते थे कि उसके लाभ के लिए उन लोगों से भी सिफ़ारिश कर दें, जिनसे आप अपनी किसी व्यक्तिगत आवश्यकता के लिए भी कभी कुछ नहीं कहते थे।

अर्थात् दूसरे लोगों के काम तो उनसे करवा लेते थे, लेकिन अपना कोई काम कभी उनसे नहीं करवाते थे। आगे लिखते हैं :

यह इतनी उदार और निष्कपट विशेषता है कि संसार में बहुत कम देखने को मिलती है।

फिर आप मिर्ज़ा इमामुद्दीन साहिब का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि यह कोई छिपी हुई बात नहीं थी कि मिर्ज़ा इमामुद्दीन साहिब इस सिलसिले के कट्टर विरोधी थे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के परिवार से भी उन्हें शत्रुता थी। लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उनकी इस दुश्मनी को दुनियावी मामलों में हमेशा नज़रअंदाज़ कर देते थे। धर्म के मामले में तो बात अलग थी। आप धर्म के मामले में विरोध सहन नहीं करते थे, लेकिन दुनियावी मामलों में आपने कभी इसकी परवाह नहीं की। अर्थात् उनके साथ अच्छे व्यवहार में आपने कभी कोई कमी नहीं आने दी। वे कई बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से आर्थिक सहायता भी ले लेते थे और इतने उपकारों के बावजूद विरोध भी करते रहते थे तथा इस प्रकार कटु शत्रु बने हुए थे।

एक बार उन्हें अपना एक घोड़ा बेचना था। उन्होंने यह बेहतर उपाय सोचा कि उस घोड़े को जम्मू ले जाया जाए और हज़रत हकीमुल उम्मत मौलवी नूरुद्दीन साहिब, ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के माध्यम से पेश किया जाए, ताकि उसके बदले अच्छी कीमत मिल सके। वहाँ राजाओं और महाराजाओं से उनकी पहचान थी, इसलिए वे उसे खरीद सकते थे। इस योजना के अनुसार स्वयं मिर्ज़ा इमामुद्दीन ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अनुरोध किया कि आप हज़रत हकीमुल उम्मत के नाम एक सिफ़ारिशी पत्र लिख दें। आपने इस अनुरोध को अस्वीकार नहीं किया और बिना किसी देर के मौलवी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम एक सिफ़ारिशी पत्र लिख दिया। आगे लिखते हैं :

यह बिल्कुल स्पष्ट बात है कि मिर्ज़ा इमामुद्दीन साहिब की दुश्मनी और विरोध किसी से छिपा हुआ नहीं था, लेकिन जब भी भलाई और उपकार करने का अवसर आया, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कभी उस दुश्मनी का ध्यान नहीं किया और उन्हें लाभ पहुँचाने में कभी देर नहीं की।

(साभार: सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, भाग द्वितीय, पृष्ठ 296–297)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो पत्र हज़रत मौलवी नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखा, वह इस प्रकार था :

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम।"

इसके बाद लिखा :

"मेरे आदरणीय और सम्मानित भाई, मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब, अल्लाह तआला आपको सुरक्षित रखे।

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।

इस पत्र को लिखने का उद्देश्य आपको एक कष्ट देना है। आशा है कि आप पूरा ध्यान देंगे और प्रयास करने में कोई कमी नहीं करेंगे।"

अर्थात् विशेष रूप से ध्यान देने की ताकीद की। आगे लिखा :

"मिर्ज़ा इमामुद्दीन साहिब, जो मेरे चचेरे भाई हैं, उनके पास एक बहुत कीमती घोड़ा है, जो तेज़ रफ़्तार है और राजाओं तथा बड़े लोगों की सवारी के योग्य है। अब वे उसे बेचना चाहते हैं। चूँकि इतने महँगे घोड़े सामान्य लोग नहीं खरीद सकते और बड़े लोग स्वयं ऐसी चीज़ों की तलाश में रहते हैं, इसलिए मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि कृपया जम्मू के राजा या उनके किसी भाई से इसका उल्लेख करके पूरी कोशिश करें कि वे उचित मूल्य पर इस घोड़े को खरीद लें। यदि उनकी ओर से ख़रीदने का पक्का इरादा हो जाए, तो घोड़ा आपकी सेवा में भेज दिया जाएगा। कृपया पूरी कोशिश करने के बाद मुझे सूचना दें।"

अंत में लिखा : "वस्सलाम। आपका विनीत, मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद।"

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, भाग द्वितीय, पृष्ठ 297–298)

यह घटना सन् 1888 की है। उस समय मिर्ज़ा इमामुद्दीन की दुश्मनी तो थी, लेकिन अभी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपना दावा नहीं किया था। फिर भी आपने इस प्रकार अपने उस विरोधी भाई की सहायता की।

हज़रत शैख़ मुहम्मद नसीब साहिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि एक समय मैं उन सिख बढ़इयों के मकान में किराए पर रहता था, जो मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन साहिब, सरबराह नम्बरदार के मकान के पास था। किसी बात पर मकान-मालकिन ने मेरे साथ बेवजह झगड़ा किया और मुझे मकान खाली करने के लिए कहा। मैंने कहा कि जब स्टाम्प पर लिखित समझौता मौजूद है, बाकायदा अनुबंध हुआ है और मैं नियमित रूप से किराया भी दे रहा हूँ, तो मैं मकान खाली नहीं करूँगा।

उसने इस मामले में मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन साहिब से सहायता लेनी चाही। वे बार-बार चौकीदार ख़ैरुद्दीन साहिब के माध्यम से मुझे बुलवाते थे। कभी मैं चला जाता और कभी नहीं जाता था। वे मुझे यह कहकर डराते थे कि झगड़ा हो जाएगा, इसलिए मकान खाली कर दो। लेकिन मैं खाली नहीं करता था।

इस पर मिर्ज़ा साहिब ने शैख़ याक़ूब अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु से सहायता माँगी। जब मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन साहिब ने उनसे कहा, तो शैख़ साहिब ने मुझे समझाया कि बेहतर है मकान खाली कर दो। उन दिनों मेरे घर एक लड़की पैदा हुई थी, इसलिए मकान बदलना बहुत कठिन था। मैंने यह बात हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को बताई। मौलवी साहिब शैख़ याक़ूब अली साहिब से नाराज़ हुए और लिखा कि पहले इनके लिए कोई दूसरा मकान दिलवाइए, फिर इन्हें खाली करवाइए।

मौलवी साहिब की नाराज़गी के बाद शैख़ साहिब बिल्कुल शांत हो गए, लेकिन मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन अपना दबाव बनाए रखते रहे।

वे कहते हैं कि आखिर एक दिन मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में पूरा हाल लिख भेजा। आपको यह पढ़कर बहुत दुःख हुआ और आपने कहा, "यह पढ़कर मुझे बहुत कष्ट हुआ है। यदि मेरे पास कोई खाली मकान होता, तो मैं अवश्य दे देता। भविष्य में मैं इसका ध्यान रखूँगा।"

इसके बाद आपने फ़रमाया, "आज जब मैं ज़ुहर की नमाज़ के लिए आऊँ और यदि शैख़ याक़ूब अली साहिब भी आए हों, तो मुझे याद दिलाना।"

उन दिनों मस्जिद मुबारक का विस्तार हो रहा था और नमाज़ उस मकान में पढ़ी जाती थी जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु का था।

वे कहते हैं कि जब मैं ज़ुहर की नमाज़ के लिए गया तो हुज़ूर तशरीफ़ लाए। मैं अभी कुछ कह भी नहीं पाया था कि मुझे देखते ही आपने स्वयं फ़रमाया, "मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन के घर से एक औरत आई थी। मैंने उसे संदेश भिजवा दिया है। अब तुम्हें कोई तकलीफ़ नहीं होगी।"

इसलिए, उसके बाद किसी ने मुझे कुछ नहीं कहा और मैं उस मकान में काफ़ी समय तक रहा, यहाँ तक कि सदर अंजुमन अहमदिया ने मुझे रहने के लिए क्वार्टर दे दिया।

जब मैंने अंजुमन की ओर से मकान मिलने पर वह किराए का मकान खाली किया, तो उस समय उस औरत का व्यवहार बिल्कुल बदल चुका था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसके साथ कोई उपकार किया था, इसलिए अब वह मुझे जाने ही नहीं देती थी और ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी कि "आप क्यों जा रहे हैं?" पहले तो झगड़े की स्थिति थी, लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के व्यवहार और उनके

उपकार के कारण वह पूरी तरह बदल गई।

वे लिखते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने एक साधारण सेवक के साथ इतनी कृपा और दयालुता दिखाई, जबकि मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन साहिब के साथ आपका किसी प्रकार का मेल-जोल भी नहीं था। न बातचीत थी और न आना-जाना। सब जानते थे कि संबंध पूरी तरह समाप्त थे। इसके बावजूद आपने मुझ पर यह उपकार किया।

(साभार: रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 5, पृष्ठ 445–446, रिवायत: हज़रत शैख़ मुहम्मद नसीब साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु)

हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं:

"मिर्ज़ा मुहम्मद बेग, पुत्र मिर्ज़ा अहमद बेग साहिब होशियारपुरी का एक घटना भी दर्ज कर देता हूँ। मिर्ज़ा मुहम्मद बेग के परिवार के साथ भी संबंध अच्छे नहीं थे और यह संबंधों की कटुता केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए थी।"

यह वही अहमद बेग और मुहम्मदी बेगम का परिवार था, जो बहुत ही धर्म-विमुख था और सिलसिले का विरोधी था।

"मिर्ज़ा मुहम्मद बेग जम्मू जाकर नौकरी करना चाहते थे और उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सिफ़ारिश की कि हज़रत हकीमुल उम्मत के नाम एक सिफ़ारिशी पत्र दे दिया जाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बिना किसी देर के निम्नलिखित पत्र लिख दिया, क्योंकि आप किसी भी जायज़ अनुरोध को अस्वीकार नहीं करते थे।"

उस पत्र में लिखा: "मुहम्मद बेग, जो लड़का आपके पास है, उसके बारे में आदरणीय को मालूम होगा। उसका पिता मिर्ज़ा अहमद बेग अपनी नासमझी और पर्दे (पूर्वाग्रह) के कारण इस विनीत सेवक से बहुत अधिक दुश्मनी और बैर रखता है... लेकिन इसमें कोई हर्ज नहीं कि उनकी कठोरता के बदले हम नरमी का व्यवहार करें और اِدۡفَعۡ بِالَّتِیۡ ھِیَ اَحۡسَنُ (बुराई को उस तरीके से दूर करो जो सबसे अच्छा हो) का सवाब प्राप्त करें।"

अर्थात् मैं उसे अच्छे तरीके से उत्तर दूँ और उसके साथ भलाई करूँ। जब अल्लाह तआला का यही आदेश है, तो उसके अनुसार चलकर उसका सवाब क्यों न प्राप्त करूँ।

"मुहम्मद बेग के कई पत्र इस विषय में मेरे पास पहुँचे कि मौलवी साहिब मुझे पुलिस विभाग में नौकरी दिलवा दें। इस पत्र के बाद हज़रत मौलवी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें पुलिस में नौकरी दिलवा दी।"

इन घटनाओं से स्पष्ट होता है कि : हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हर प्रकार से अल्लाह की मख़लूक़ को लाभ पहुँचाने के लिए तैयार रहते थे और दान, उदारता तथा सिफ़ारिश करने में कभी कंजूसी नहीं करते थे। लेकिन जहाँ आपको लगता कि कुछ देना फ़िज़ूलखर्ची का रूप ले रहा है, वहाँ आप उससे बचते थे। आप नहीं चाहते थे कि किसी प्रकार का अपव्यय हो।

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, भाग द्वितीय, पृष्ठ 298–299)

हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ही लिखते हैं:

"क़ादियान में एक व्यक्ति निहाल चंद (जिसे निहाला कहते थे), बहारू राज नाम का एक ब्राह्मण था।"

वह हिंदू था। अपनी युवावस्था में वह मुक़दमेबाज़ी के लिए बहुत प्रसिद्ध था। जीवन के अंतिम समय तक भी लगभग उसकी यही स्थिति रही। वह उन लोगों में से था जो हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के परिवार के साथ अक्सर विरोध और शरारत करते रहते थे। बाद में वह सिलसिले के दुश्मनों के साथ भी रहने लगा।

जीवन के अंतिम दिनों में उसकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई। यहाँ तक कि कई बार उसे अपनी रोज़मर्रा की ज़रूरतें पूरी करने में भी कठिनाई होती थी। खाने-पीने तक के लाले पड़ गए थे।

एक बार वह हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के दरवाज़े पर आया और मिलने की इच्छा प्रकट करवाई। वह दुश्मन था, लेकिन ऐसे लोगों को फिर भी शर्म नहीं होती। उसे मिलने की अनुमति माँगते हुए सूचना दी गई।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तुरंत बाहर तशरीफ़ लाए। उसने सलाम किया और अपनी पूरी परेशानी सुनानी शुरू की।

हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने न केवल उसे दिलासा दिया, बल्कि 25 रुपये लाकर उसके हाथ में रख दिए और फ़रमाया:

"फ़िलहाल इससे अपना काम चला लो। फिर जब ज़रूरत हो, मुझे बता देना।"

इसके बाद उसका यह नियमित तरीका बन गया कि वह हर एक-दो महीने बाद आता और अपनी आवश्यकताओं के लिए आपसे उचित धनराशि ले जाता।

वह केवल हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम से ही नहीं लेता था, बल्कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से भी उसने उधार के रूप में एक अच्छी-खासी रकम एक निश्चित वादे पर ली थी।

जब वादा पूरा होने का समय निकल गया तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे रकम वापस माँगने के लिए कहलवाया, लेकिन उसने टालमटोल वाला जवाब देकर बात टाल दी।

आख़िरकार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे (रावी को) फ़रमाया कि मैं उससे रकम की माँग करूँ।

जब मैंने उससे कहा तो उसने ऊपर वर्णित घटना सुनाई और कहा:

"मौलवी साहिब बार-बार आदमी भेजते हैं, लेकिन मिर्ज़ा जी अलैहिस्सलाम तो मुझे हमेशा पैसे देते रहते हैं और उसी से मेरा गुज़ारा चलता है।"

मैंने आकर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु को सारी बात बताई। उन्होंने फ़रमाया:

"अच्छा, अब उससे कुछ मत कहना।" इसके बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी उससे वह रकम वापस नहीं माँगी।

फिर उसी प्रकार एक व्यक्ति पंडित बैजनाथ भी था। वे कहते हैं:

"मुझे मालूम है कि कई बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसके साथ भी अच्छा व्यवहार किया था।"

हालाँकि उसका व्यवहार अच्छा नहीं था।

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, भाग द्वितीय, पृष्ठ 289–290)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि अपनी अंग्रेज़ी पुस्तक अहमदिया मूवमेंट में पादरी वाल्टर (Walter), एम.ए., जो YMCA के सेक्रेटरी थे, उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में यह राय लिखी:

"हर प्रकार से यह बात सिद्ध है कि मिर्ज़ा साहिब अपनी आदतों में अत्यन्त सादगी और उदार भाव रखने वाले थे। अपने विरोधियों की कठोर विरोध और अत्याचार के सामने उन्होंने जो नैतिक साहस दिखाया, वह निश्चित रूप से प्रशंसा के योग्य है। केवल वही व्यक्ति, जिसमें आकर्षित कर लेने वाली शक्ति और अत्यन्त मधुर स्वभाव हो, ऐसे लोगों की मित्रता और निष्ठा प्राप्त कर सकता है, जिनमें से कम-से-कम दो ने अफ़ग़ानिस्तान में अपने विश्वास के कारण अपनी जान दे दी।"

यहाँ अफ़ग़ानिस्तान के शहीदों का उल्लेख है। उन्होंने भी उनका ज़िक्र किया और कहा कि यह सब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के व्यवहार का ही प्रभाव था।

आगे उन्होंने लिखा:

"फिर भी उन्होंने मिर्ज़ा साहिब का साथ नहीं छोड़ा। मैंने कुछ पुराने अहमदियों से पूछा कि वे अहमदी क्यों बने, तो अधिकांश ने सबसे बड़ा कारण मिर्ज़ा साहिब के व्यक्तिगत प्रभाव और उनके आकर्षक व्यक्तित्व को बताया।"

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, भाग 1, पृष्ठ 268–269, रिवायत संख्या 297)

सार्वजनिक सभाओं में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि यदि विरोधी लोग मेरे पास आएँ, अपने संदेह दूर करने के लिए मुझसे प्रश्न करें, तो मैं उनका खर्च उठाने के लिए भी तैयार हूँ।

इसी बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि मियाँ फ़ख़रुद्दीन साहिब मुल्तानी ने मुझे बताया:

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय एक बार मेरे पिता यहाँ आए। वे बहुत बड़े विरोधी थे और बुरा-भला कहा करते थे। यहाँ आकर भी वे बहुत तीखी बातें करते रहे। जब वे मुल्तान में थे तो कहा करते थे कि यदि कभी मिर्ज़ा से मुलाकात हुई तो (नऊज़ुबिल्लाह) उसके मुँह पर भी लानत भेजूँगा। अर्थात् सामने भी वही कहूँगा जो यहाँ कहता हूँ।"

वे कहते हैं:

"मैं उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास ले गया। जब हुज़ूर बाहर तशरीफ़ लाए तो मेरे पिता बहुत अदब से खड़े हो गए और फिर घबराकर पीछे हटकर बैठ गए। उस समय सभा में और भी लोग मौजूद थे।"

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने बिना किसी प्रश्न के बैठे-बैठे भाषण शुरू किया और कई बार फ़रमाया:

"हम तो चाहते हैं कि लोग हमारे पास आएँ, हमारी बातें सुनें और हमसे प्रश्न करें। हम तो उनके आने-जाने का खर्च उठाने के लिए भी तैयार हैं। लेकिन लोग आते ही नहीं, और यदि आ भी जाते हैं तो चुपचाप बैठे रहते हैं, फिर पीछे जाकर बातें बनाते हैं।"

इस प्रकार हुज़ूर ने खुलकर भाषण किया, तबलीग़ की और कई बार उन्हें बोलने के लिए प्रेरित भी किया।

मेरे पिता बहुत वाक्पटु थे, लेकिन उस समय जैसे उनके मुँह पर ताला लग गया हो। वे एक शब्द भी न बोल सके। वहाँ से लौटने के बाद मैंने उनसे पूछा: "आप वहाँ बोले क्यों नहीं?" लेकिन उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया और बात टाल गए।

मियाँ फ़ख़रुद्दीन साहिब कहा करते थे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भाषण में मेरे पिता को विशेष रूप से संबोधित नहीं किया था, बल्कि सामान्य रूप से भाषण किया था।

लेकिन दुर्भाग्य से मियाँ फ़ख़रुद्दीन साहिब भी ख़िलाफ़त-ए-सानिया के समय जमाअत छोड़ गए थे।

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, भाग 1, पृष्ठ 54–55, रिवायत संख्या 74)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि सफ़िया

बेगम, पुत्री स्वर्गीय मौलवी अब्दुल क़ादिर साहिब लुधियानवी, जो नुसरत हाई स्कूल में अध्यापिका थीं, उन्होंने मुझे बताया कि :

"एक बार एक भिखारी खिड़की के पास आकर कुर्ता माँग रहा था।"

एक भिखारी आया और उसने कुर्ता माँगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपना पहना हुआ कुर्ता उतारकर खिड़की से उसे दे दिया। मेरे स्वर्गीय पिता ने यह देखकर कहा : "अल्लाह-अल्लाह! कैसी उदारता दिखा रहे हैं!"

(सीरतुल महदी, जिल्द 2, भाग 5, पृष्ठ 311, रिवायत संख्या 1565)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूल बीबी साहिबा, स्वर्गीय हाफ़िज़ हामिद अली साहिब की पत्नी, जो मौलवी अब्दुर्रहमान साहिब फ़ाज़िल जट्ट की सास थीं, उन्होंने बताया :

"हमारे खाने-पीने और कपड़ों का पूरा खर्च हुज़ूर अलैहिस्सलाम ही उठाते थे।"

एक बार हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने एक कपड़े की वास्कट अपने लिए और एक हाफ़िज़ हामिद अली साहिब के लिए सिलवाई। दोनों एक जैसी थीं। सर्दियों का मौसम था।

मैंने हाफ़िज़ साहिब से कहा, "मैं सुबह तहज्जुद की नमाज़ के लिए उठती हूँ और सहरी तैयार करती हूँ, उस समय मुझे बहुत ठंड लगती है।"

हाफ़िज़ साहिब ने वह गर्म सदरी, जो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उन्हें बनवाकर दी थी, मुझे दे दी और कहा, "तुम इसे पहन लिया करो।"

जब मैं उसे पहनकर चूल्हे में आग जला रही थी, तो उसी समय हुज़ूर अलैहिस्सलाम आ गए। आपने मुस्कराते हुए पूछा :

"रसूल बीबी! क्या तुमने मेरी वास्कट चुरा ली है?" मैंने अर्ज़ किया :

"हुज़ूर! सब कुछ तो आपका ही है। हम आपका ही खाते हैं और आपका ही पहनते हैं।"

इस पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम मुस्कराए और फ़रमाया : "अच्छा, खूब खाओ और पियो।"

(साभार: सीरतुल महदी, जिल्द 2, भाग 5, पृष्ठ 288, रिवायत संख्या 1517)

हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं :

"आपकी सामान्य आदत यह थी कि जो कुछ भी किसी को देते थे, वह दिखावे के लिए नहीं होता था, बल्कि केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने और उसकी मख़लूक़ पर दया करने के भाव से होता था। इसलिए आम तौर पर आप बहुत ही गुप्त तरीक़े से सहायता करते थे। हाँ, कभी-कभी दूसरों को प्रेरित करने और व्यावहारिक शिक्षा देने के लिए खुले तौर पर भी दान किया करते थे।

गुप्त रूप से देने का आपका एक तरीका यह भी था कि कई बार आप इस प्रकार सहायता करते थे कि लेने वाले को भी बड़ी मुश्किल से पता चलता था।"

इस संबंध में वे एक घटना बयान करते हैं : "मुंशी मुहम्मद नसीब साहिब (जो बाद में क़ादियान से संबंध तोड़ चुके थे) एक अनाथ के रूप में क़ादियान आए थे। हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम की कृपा से उन्होंने क़ादियान में रहकर शिक्षा प्राप्त की। उनके सभी खर्च और आवश्यकताओं का भार जमाअत पर था।

जब वे जवान हुए और उनका विवाह हो गया, तो वे लाहौर के एक अख़बार के दफ़्तर में लेखक बने। बाद में वे क़ादियान के 'बद्र' दफ़्तर में 12 रुपये मासिक वेतन पर नौकरी करने लगे।

जब अल्लाह तआला ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु को पहला पुत्र, नसीर अहमद, प्रदान किया : जो बाद में कम आयु में ही देहांत कर गए : तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को उनके लिए एक धाय (दूध पिलाने वाली महिला) की आवश्यकता हुई।

मैंने शैख़ मुहम्मद नसीब साहिब को सलाह दी कि ऐसे अवसर पर अपनी पत्नी की सेवाएँ प्रस्तुत कर दो। यह ऐसा काम है जिसमें पुण्य भी है और लाभ भी।

शैख़ साहिब ने मेरी सलाह को सम्मानपूर्वक स्वीकार किया और उनकी पत्नी को साहिबज़ादा नसीर अहमद को दूध पिलाने का कार्य सौंप दिया गया।

इसी दौरान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बातचीत के दौरान पूछा कि शैख़ मुहम्मद नसीब साहिब को कितना वेतन मिलता है।

जब आपको मालूम हुआ कि उन्हें केवल 12 रुपये मासिक मिलते हैं, तो आपने महसूस किया कि इतनी कम तनख़्वाह में शायद उनका गुज़ारा ठीक से नहीं होता होगा। यद्यपि उस समय वस्तुएँ बहुत सस्ती थीं, फिर भी हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम को उनकी कठिनाई का एहसास हुआ।

एक दिन आप उनके कमरे के पास से गुज़रे और 20–25 रुपये की एक पोटली चुपचाप उनके कमरे में डाल दी।

शैख़ साहिब पहले तो सोचने लगे कि यह पैसा कहाँ से आया। बाद में उन्हें पता चला कि हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने उनकी आर्थिक तंगी महसूस करके यह राशि रखी थी ताकि उन्हें तकलीफ़ न हो और वे आराम से अपना गुज़ारा कर सकें।

चूँकि उस समय उनके खाने-पीने की आवश्यकताएँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के खुले दस्तरख़ान से पूरी हो जाती थीं, इसलिए उन्होंने उस धन से अपनी पत्नी के लिए गहना बनवा लिया।"

(साभार: सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, भाग द्वितीय, पृष्ठ 294–295)

हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ही लिखते हैं :

"जहाँ आपकी आदत यह थी कि आप किसी भी माँगने वाले को कभी खाली हाथ नहीं लौटाते थे, वहीं आपकी यह भी आदत थी कि कई लोगों की ज़रूरतों को वे माँगने से पहले ही समझ लेते थे और स्वयं उनकी सहायता कर देते थे।

इसी प्रकार 28 अक्टूबर 1904 की बात है। फ़ज्र की नमाज़ से पहले आपने एक सच्चे मुहाजिर को आठ या दस रुपये देते हुए फ़रमाया :

'सर्दियों का मौसम है। आपको कपड़ों की ज़रूरत होगी।'

उस मुहाजिर ने कोई माँग नहीं की थी। स्वयं हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उसकी आवश्यकता महसूस करके यह धनराशि प्रदान की।"

यह केवल एक घटना नहीं थी। ऐसी घटनाएँ अनेक बार हुईं। आप सामान्य रूप से ज़रूरतमंद लोगों की गुप्त रूप से सहायता करते रहते थे। इसमें न मित्र और शत्रु का भेद था और न हिंदू और मुसलमान का।

(साभार: सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, भाग द्वितीय, पृष्ठ 288–289)

हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आदत में यह बात भी शामिल थी कि कई बार आप किसी की आवश्यकता का स्वयं अनुभव कर लेते थे और उसके माँगने या अपनी परेशानी बताने का इंतज़ार नहीं करते थे, बल्कि स्वयं ही सहायता कर देते थे।"

इस संबंध में आदरणीय शैख़ फ़तह मुहम्मद साहिब, पेंशन प्राप्त इंस्पेक्टर, रियासत कश्मीर, जो लंबे समय तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में आते रहे, बयान करते हैं :

"जब भी मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में आता, आप हमेशा मेरा यात्रा-खर्च देने के लिए तैयार रहते थे। लेकिन मुझे उसकी आवश्यकता नहीं होती थी, इसलिए मैंने कभी नहीं लिया।

फिर भी आपकी उदारता इतनी महान थी कि बिना पूछे ही आप स्वयं पेश कर देते थे। और यह केवल मेरे साथ नहीं था, बल्कि आप अनेक लोगों को इसी प्रकार सहायता दिया करते थे। शाम और अरब से भी कुछ लोग आते थे। कई बार आप उन्हें वापसी यात्रा के लिए अच्छी-खासी धनराशि दे देते थे, क्योंकि आप जानते थे कि वे बहुत दूर से आए हैं।"

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, भाग तृतीय, पृष्ठ 309)

इसी प्रकार शैख़ याक़ूब अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं :

"अक्सर ऐसे लोग भी आ जाते थे जो सामान्य रूप से किसी से माँगते नहीं थे। वे केवल एक पर्ची लिखकर दे देते थे और किसी को पता भी नहीं चलता था कि उन्होंने सहायता माँगी है।

जब हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम अंदर से उस व्यक्ति के लिए कुछ भेजते, तब लोगों को पता चलता। कभी ऐसा भी होता कि आप अंदर जाते समय कह देते :

'तुम बैठो, मैं अभी आता हूँ।' लोग समझते कि हुज़ूर वापस आकर फिर बातचीत करेंगे, लेकिन थोड़ी देर बाद मालूम होता कि आप उस ज़रूरतमंद के लिए उसकी माँगी हुई नक़द राशि या कपड़ा लेकर आ रहे हैं।"

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, भाग द्वितीय, पृष्ठ 294)

हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं :

"मियाँ जी निज़ामुद्दीन अहमदी, निवासी कपूरथला, बहुत गरीब व्यक्ति थे। वे पैदल चलकर क़ादियान पहुँचे और दो आने नज़राने के रूप में हुज़ूर अलैहिस्सलाम की सेवा में पेश किए।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने 'जज़ाकुमुल्लाह' कहकर वे दो आने स्वीकार कर लिए।

कुछ दिन बाद जब निज़ामुद्दीन साहिब वापस जाने लगे, तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : 'ठहरो।' फिर आप अंदर गए और सात या आठ रुपये लाकर मियाँ जी निज़ामुद्दीन को दे दिए।"

(असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 215)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं :

"मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथलवी ने मुझे लिखकर बताया कि मुंशी अली गौहर साहिब कपूरथला के डाकखाने में नौकरी करते थे। सेवानिवृत्ति के बाद उन्हें केवल ढाई रुपये पेंशन मिलती थी। उनका गुज़ारा बहुत कठिन हो गया था।

वे अपने घर जालंधर चले गए। उन्होंने मुझे पत्र लिखा कि जब तुम क़ादियान जाओ तो मुझे भी साथ ले चलना। वे बहुत सच्चे और निष्ठावान अहमदी थे।

जब मैं क़ादियान जाने लगा तो उन्हें साथ लेने के लिए जालंधर गया। वे बहुत विनम्र और मेहमाननवाज़ व्यक्ति थे। उन्होंने मेरे लिए बड़े आदर से अच्छा भोजन तैयार कराया।

बाद में मुझे पता चला कि उन्होंने यह भोजन कराने के लिए अपने घर का कोई

बर्तन आदि बेच दिया था।" यही उन सहाबा की भी स्थिति थी, जिनकी परवरिश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने की थी। वे आगे लिखते हैं :

"मैंने मुंशी अली गौहर साहिब का रेल टिकट अपने पैसे से खरीद लिया। वे बार-बार उसका पैसा देने पर ज़ोर देने लगे। मैंने कहा, 'आप यह राशि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में नज़राने के रूप में पेश कर दें।'

मुझे उनके हालात मालूम थे, इसलिए टिकट मैंने स्वयं ले लिया। जब उन्होंने बहुत आग्रह किया, तो मैंने यही सलाह दी। इसलिए उन्होंने दो रुपये हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में पेश कर दिए।

आठ-दस दिन बाद जब हम वापसी की अनुमति लेने गए, तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अनुमति दे दी और मुंशी साहिब से फ़रमाया : 'ज़रा आप ठहरिए।'

फिर आप अंदर गए और दस या पंद्रह रुपये लाकर मुंशी साहिब को दे दिए। मुंशी साहिब रोने लगे और अर्ज़ किया : 'हुज़ूर! मुझे तो आपकी सेवा करनी चाहिए, या मैं आपसे लूँ?'

तब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझसे फ़रमाया : 'ये आपके मित्र हैं, आप इन्हें समझाइए।' जब मैंने उन्हें समझाया कि इसमें बरकत है, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दिया है, उसे स्वीकार कर लीजिए, तब उन्होंने वह राशि ले ली और हम वापस आ गए।

हालाँकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मुंशी साहिब की आर्थिक स्थिति का बिल्कुल भी पता नहीं था।"

(साभार: सीरतुल महदी, जिल्द 2, भाग 4, पृष्ठ 96–97, रिवायत संख्या 1123)

हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ही लिखते हैं कि :

हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम को अपने सेवकों का दिल रखने का बहुत अधिक ध्यान रहता था। उनके लिए आप स्वयं अपनी ओर से हर प्रकार का त्याग और बलिदान व्यवहार में दिखाते थे।

वे कहते हैं कि एक बार ईद का दिन था और मेरा साफ़ा (पगड़ी) साफ़ नहीं था। जब भी हम क़ादियान आते थे, तो केवल एक-दो दिन की छुट्टी निकालकर आते थे। लेकिन यहाँ पहुँचने पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ठहरने का आदेश देते कि कुछ दिन यहीं रहो। फिर हमें नौकरी पर लौटने की भी चिंता नहीं रहती थी और हम वहीं ठहर जाते थे।

इसी प्रकार एक बार जब हम आए तो ईद का दिन आ गया। मैं केवल एक ही साफ़ा साथ लाया था। वह मैला हो गया। मैंने सोचा कि बाज़ार से नया खरीद लाऊँ।

मैं बाज़ार की ओर जा रहा था कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने मुझे देख लिया। आपकी दूरदर्शिता तो अल्लाह की दी हुई थी। आपने पूछा, "कहाँ जा रहे हो?"

मैंने अर्ज़ किया, "आज ईद का दिन है। मेरा साफ़ा मैला हो गया है। मैं बाज़ार से नया खरीदने जा रहा हूँ।"

उसी समय आप वहीं खड़े-खड़े अपना अमामा (पगड़ी) उतारकर मुझे दे दिया और फ़रमाया : "यदि यह तुम्हें पसंद है तो इसे ले लो। मैं दूसरी बाँध लूँगा।"

आपके इस प्रेम और स्नेह का मुझ पर जो प्रभाव हुआ, उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। मैंने पूरे सम्मान के साथ वह अमामा ले लिया। उसके बाद आप बिना किसी संकोच के घर चले गए और थोड़ी देर बाद दूसरी पगड़ी बाँधकर वापस आ गए।

(साभार: असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 225–226)

हज़रत मियाँ ख़ैरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि :

यह उस समय की बात है जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अभी दावा नहीं किया था। आपके बड़े भाई का विवाह था। उन्होंने कुछ बकरे मँगवाए थे, जिन्हें नंगल बागबानाँ का एक व्यक्ति चराया करता था।

एक दिन हुज़ूर अलैहिस्सलाम सैर के लिए जा रहे थे। रास्ते में वही व्यक्ति बकरे चरा रहा था। उसके साथ उसका एक बेटा भी था और वह नंगे पैर था।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उसे देखकर फ़रमाया : "मियाँ! तुम नंगे पैर चल रहे हो। क्या तुम्हें काँटे नहीं चुभते?" उसने अर्ज़ किया :

"हुज़ूर! मेरे पास जूते नहीं हैं और मेरे पिता गरीब हैं। वे खरीद नहीं सकते।"

इस पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपने पैरों से एक जूता उतारा और फ़रमाया :

"इसे पहनकर देखो। देखो, तुम्हारे पैर में ठीक आता है या नहीं।"

उस लड़के ने संकोच किया और कहा कि मैं आपकी जूती कैसे पहन सकता हूँ?

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने प्रेमपूर्वक ज़ोर देकर कहा : "नहीं, पहनकर देखो।"

उसने एक पैर में जूता पहन लिया। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "हाँ, ठीक है। यह तुम्हें आ गया है।" फिर आपने दूसरा जूता भी उतारकर उसे दिया और फ़रमाया : "इसे भी पहन लो।" उसने दूसरा जूता भी पहन लिया।

यह देखकर हुज़ूर अलैहिस्सलाम बहुत प्रसन्न हुए और फ़रमाया :

"बस, अब ठीक है। अब तुम इन्हें ही इस्तेमाल करो।" इसके बाद आप स्वयं नंगे पैर घर वापस लौट आए।

यह घटना उस समय की है जब आपकी आयु लगभग बीस या तीस वर्ष रही होगी।

(साभार: रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 5, पृष्ठ 380)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने उपकारी और मार्गदर्शक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुसरण में दान और उदारता की प्रतिमूर्ति थे। लेकिन कुछ अवसरों पर हम यह भी देखते हैं कि किसी विशेष बुद्धिमत्ता और उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए आपने किसी माँगने वाले को कुछ देने से भी इंकार किया।

इसी संबंध में हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं :

"सन् 1889, जो बैअत का वर्ष था, उन दिनों आप लुधियाना में थे। एक अवसर पर एक व्यक्ति आपके पास आया और उसने कहा कि उसका एक रिश्तेदार मर गया है। उसके पास कफ़न-दफ़न का कोई प्रबंध नहीं है। उसने एक कटोरे में चाँदी और ताँबे के कुछ सिक्के भी रखे हुए थे, ताकि दिखा सके कि कुछ चंदा इकट्ठा हो चुका है, लेकिन अभी और आवश्यकता है।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आदरणीय हज़रत क़ाज़ी ख़्वाजा अली साहिब, जो अत्यंत सच्चे और समर्पित बुज़ुर्ग थे, से फ़रमाया :

"क़ाज़ी साहिब! इनके साथ जाइए और कफ़न का पूरा प्रबंध कर दीजिए।"

अर्थात् जो भी कफ़न-दफ़न की आवश्यकता हो, वह पूरी कर दीजिए।

वे लिखते हैं : "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सामान्य आदत तो यह थी कि जो उचित समझते, स्वयं दे देते थे। इसलिए यह आदेश सुनकर सेवकों को भी आश्चर्य हुआ।"

क़ाज़ी साहिब ने यह नहीं पूछा कि कितना देना है, बल्कि उसी समय उस व्यक्ति के साथ चल पड़े और कहा : "चलो भाई, मैं तुम्हारा पूरा प्रबंध कर देता हूँ।" वह व्यक्ति क़ाज़ी साहिब को साथ लेकर चला गया। कुछ देर बाद क़ाज़ी साहिब हँसते हुए वापस आए और बोले :

"हुज़ूर! वह तो बहुत बड़ा धोखेबाज़ निकला। रास्ते में उसने मेरी बहुत मिन्नतें कीं कि खुदा के लिए मेरे साथ मत चलिए। जो देना हो, यहीं दे दीजिए।" मैंने कहा :

"मुझे तो स्वयं जाकर देखने का आदेश मिला है। तुम्हारे पास जो कुछ है, मुझे दे दो। जितना खर्च होगा, मैं वहीं कर दूँगा।"

आख़िर जब उसने देखा कि मैं किसी तरह मानने वाला नहीं हूँ, तो हाथ जोड़कर शर्मिंदा होते हुए कहने लगा :

"न कोई मरा है और न किसी कफ़न-दफ़न की ज़रूरत है। यह तो मेरा पेशा है। अब मेरी पोल मत खोलिए। आप वापस चले जाइए। मैं अब यह काम नहीं करूँगा।"

कभी-कभी माँगने वालों की ऐसी स्थिति भी होती थी।

जब क़ाज़ी साहिब ने यह घटना सुनाई, तो स्वाभाविक रूप से सबको हँसी भी आई। लेकिन साथ ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ईमानदार दूरदर्शिता और श्रेष्ठ चरित्र का भी अद्भुत प्रभाव सामने आया। आपने उस व्यक्ति के बारे में बुरा नहीं सोचा, उसे डाँटा भी नहीं, बल्कि ऐसा तरीका अपनाया जिससे उसकी सुधार भी हो गई और जहाँ खर्च करना उचित नहीं था, वहाँ धन भी व्यर्थ खर्च नहीं हुआ।

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी, भाग द्वितीय, पृष्ठ 287–288)

इसी प्रकार की एक घटना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्वयं भी बयान की है। आपने फ़रमाया : "लुधियाना में एक व्यक्ति मेरे पास आया और उसने कहा कि एक आदमी मर गया है। मैं उसके कफ़न के लिए चंदा इकट्ठा कर रहा हूँ। केवल चार आने की कमी रह गई है।"

एक व्यक्ति ने कहा : "पहले यह देखना चाहिए कि वह मृतक कहाँ है, फिर उसकी पूरी सहायता करनी चाहिए।"

इसलिए वह व्यक्ति उसके साथ चल पड़ा। थोड़ी दूर जाने के बाद वह माँगने वाला भाग गया, क्योंकि उसकी पूरी कहानी झूठी थी।

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 8, पृष्ठ 15, संस्करण 2022)

इसी प्रकार एक बार कहीं से पत्र आया कि : "हम एक मस्जिद बनाना चाहते हैं और बरकत के लिए आपसे भी कुछ चंदा चाहते हैं।" हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"हम दे तो सकते हैं और यह कोई बड़ी बात भी नहीं है, लेकिन इस समय हमारे अपने यहाँ बहुत से बड़े और आवश्यक कार्य चल रहे हैं, जिन पर खर्च करना ज़रूरी है। उनके मुकाबले इस प्रकार के खर्च में शामिल होना हमें अपव्यय (फ़िज़ूलखर्ची) प्रतीत होता है। इसलिए हम इसमें कैसे शामिल हों?"

"यहाँ जो मस्जिद अल्लाह स्वयं बनवा रहा है, वही मस्जिद अक्सा है और वही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। लोगों को चाहिए कि उसके लिए धन भेजें और इस पुण्य में भागीदार बनें।"

फिर आपने फ़रमाया : "हमारा सच्चा मित्र वही है जो हमारी बात माने, न कि वह जो अपनी बात को प्राथमिकता दे।"

इसके बाद आपने एक उदाहरण देते हुए फ़रमाया : "एक बार हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैह के पास एक व्यक्ति आया और बोला कि हम एक मस्जिद बना रहे हैं, आप भी उसमें कुछ चंदा दीजिए।"

उन्होंने क्षमा चाही और कहा : "मैं इसमें कुछ नहीं दे सकता।"

शेष ..

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ि. जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

इसी प्रकार रसूले करीम (स.अ.व.) की मृत्यु का समाचार सुन कर उस स्त्री का हाल हुआ। वह आपको मृतक रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी और दूसरी ओर इस सूचना का खण्डन भी नहीं कर सकती थी। इसलिए शोक के तीव्र संवेग में यह कहती जाती थी अरे रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने यह क्या किया अर्थात् ऐसा वफ़ादार व्यक्ति हमें यह आघात पहुँचाने पर क्योंकर सहमत हो गया।

जब लोगों ने देखा कि उसे अपने पिता, पति और भाई की कोई परवाह नहीं तो वे उसकी सच्ची भावनाओं को समझ गए तो उन्होंने कहा कि अमुक की मां ! रसूलुल्लाह (स.अ.व.) तो जिस प्रकार तू चाहती है ख़ुदा की कृपा से कुशलपूर्वक हैं। इस पर उसने कहा मुझे दिखाओ वह कहां हैं? लोगों ने कहा आगे चली जाओ, वह आगे खड़े हैं। वह महिला भाग कर आप तक पहुँची तथा आप के आंचल को पकड़ कर बोली हे अल्लाह के रसूल ! मेरे मां-बाप आप पर बलिहारी। जब आप सुरक्षित हैं तो कोई मरे मझे परवाह नहीं।

(بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللّٰهِ لَا أُبَالِي إِذْ سَلِمْتَ مِنْ عَطَبٍ)

पुरुषों ने युद्ध में ईमान का वह आदर्श प्रदर्शित किया और स्त्रियों ने वफ़ादारी का यह नमूना दिखाया जिस का उदाहरण अभी मैंने वर्णन किया है। ईसाई जगत मरयम मगदलीनी (MAGDALENE) और उसकी साथी स्त्रियों की उस वीरता पर गर्व करता है। कि वह मसीह की क़ब्र पर प्रातःकाल शत्रुओं से छुप कर पहुँची थी। मैं उन से कहता हूँ आओ तनिक मेरे प्रियतम के वफ़ादारों और प्राण बलिदान करने वालों को देखो किन परिस्थितियों में उन्होंने उस का साथ दिया और किन अवस्थाओं में उन्होंने एकेश्वरवाद के ध्वज को फहराया।

इस प्रकार के त्याग की भावना का एक अन्य उदाहरण और भी इतिहास की पुस्तकों में मिलता है। जब रसूले करीम (स.अ.व.) शहीदों को दफ़्न करके मदीना वापस गए तो फिर स्त्रियां और बच्चे स्वागत के लिए नगर से बाहर निकल आए। रसूले करीम (स.अ.व.) की ऊँटनी की बाग मदीना के रईस सअद बिन मआज़ ने पकड़ी हुई थी और गर्व से आगे-आगे दौड़े जाते थे। कदाचित संसार से यह कह रहे थे कि देखा हम मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को कुशलपूर्वक अपने घर वापस ले आए। शहर के पास उन्हें अपनी बूढ़ी मां जिसकी दृष्टि कमज़ोर हो चुकी थी, आती हुई मिली। उहद में उसका एक बेटा उमर बिन मआज़ भी मारा गया था उसे देख कर सअद बिन मआज़ ने कहा हे अल्लाह के रसूल (स.अ.व.) ! मेरी मां !!! हे अल्लाह के रसूल (स.अ.व.) मेरी मां आ रही है। आप ने कहा ख़ुदा तआला की बरकतों के साथ आए। बुढ़िया आगे बढ़ी और अपनी कमज़ोर फटी आँखों से इधर-उधर देखा कि कहीं रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की शक्ल दिखाई दे जाए। अन्ततः रसूले करीम (स.अ.व.) का चेहरा पहचान लिया और प्रसन्न हो गई। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फ़रमाया माई मुझे तुम्हारे बेटे के शहीद होने पर तुम से सहानुभूति है। इस पर उस नेक स्त्री ने कहा हुज़ूर ! जब मैंने आपको सुरक्षित देख लिया तो समझो कि मैंने कष्ट को भून कर खा लिया। "कष्ट को भून कर खा लिया" कितना विचित्र मुहावरा है, प्रेम की कितनी आगाध भावनाओं को दर्शाता है। शोक मनुष्य को खा जाता है वह स्त्री जिस की वृद्धावस्था में उसके बुढ़ापे का सहारा टूट गया किस बहादुरी से कहती है मेरे बेटे के शोक ने मुझे क्या खाना है जब मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) जीवित हैं तो मैं उस शोक को खा जाऊँगी। मेरे बेटे की मृत्यु मुझे मारने का कारण नहीं होगी अपितु यह विचार कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के लिए उसने प्राण दिए मेरी शक्ति को बढ़ाने का कारण होगा। हे अन्सार ! मेरे प्राण तुम पर बलिहारी हों, तुम कितना पुण्य ले गए।

बहरहाल रसूले करीम (स.अ.व.) सकुशल मदीना पहुँचे। यद्यपि इस युद्ध में बहुत से मुसलमान मारे भी गए और बहुत से घायल भी हुए परन्तु फिर भी उहद का युद्ध पराजय नहीं कहला सकता। जिन घटनाओं का मैंने ऊपर उल्लेख किया है उन्हें दृष्टिगत रखते हुए यह एक महान विजय थी, ऐसी विजय कि मुसलमान उसे प्रलय तक स्मरण करके अपने ईमान में वृद्धि कर सकते हैं तथा वृद्धि करते रहेंगे। मदीना पहुँच कर आप स. ने फिर अपना मूल कार्य अर्थात् प्रशिक्षण, शिक्षा तथा आत्मशुद्धि का कार्य आरम्भ कर दिया परन्तु आप स. यह कार्य सरलता और सुगमता से नहीं कर सके, उहद की घटना के पश्चात् यहूद में और भी दुस्साहस पैदा हो गया तथा पाखंडियों (मुनाफ़िको) ने और अधिक सर उठाना आरम्भ कर दिया तथा वे समझे कि कदाचित् इस्लाम को मिटा देना मानव-शक्ति के अन्दर की बात है। अतः यहूदियों ने आप को नाना प्रकार से कष्ट देना आरम्भ कर दिया। गन्दे छन्द बनाकर उनमें आप के वंश की निन्दा की जाती थी। एक बार आप को किसी विवाद का निर्णय करने कि लिए यहूदियों के क़िले में जाना पड़ा तो उन्होंने षड्यंत्र किया कि जहां आप बैठे हैं उसके ऊपर से पत्थर की एक बड़ी शिला गिरा कर आपको शहीद कर दिया जाए, परन्तु ख़ुदा तआला ने आपको समय पर सूचित कर दिया तथा आप वहाँ से बिना कुछ कहे उठकर चले आए। बाद में यहूदियों ने अपनी ग़लती को स्वीकार कर लिया। मुसलमान स्त्रियों का बाज़ार में अपमान किया जाता था। एक बार इस झगड़े में एक मुसलमान मारा भी गया। एक बार यहूदियों ने एक मुसलमान लड़की का सर पत्थर मार-मार कर कुचल दिया और वह तड़प-तड़प कर मर गई। इन समस्त कारणों से मुसलमानों को यहूदियों से भी युद्ध करना पड़ा, परन्तु अरब और यहूद के कानून के अनुसार मुसलमानों ने उन्हें मारा नहीं अपितु उन्हें मदीना से पलायन करने की शर्त पर छोड़ दिया। अतः उन दोनों क़बीलों में से एक तो शाम की ओर पलायन कर गया और दूसरे का कुछ भाग शाम चला गया और कुछ मदीना से उत्तर दिशा में ख़ैबर नामक एक नगर की ओर। यह नगर अरब में यहूदियों का केन्द्र था और सुदृढ़ किलों पर आधारित था।

मदिरापान के निषेध का आदेश और उसका प्रभाव

उहद के युद्ध तथा उसके बाद होने वाले युद्ध के अन्तराल में संसार ने इस्लाम के अपने अनुयायियों पर होने वाले प्रभाव का एक स्पष्ट उदाहरण देखा। हमारा अभिप्राय मदिरा निषेध से है। इस्लाम से पूर्व अरबों की दशा का वर्णन करते हुए हम ने बताया था कि अरब लोग मदिरापान के अभ्यस्थ थे। प्रत्येक प्रतिष्ठित अरब वंश में दिन में पांच बार मदिरापान किया जाता था तथा मदिरा के नशे में चूर हो जाना उनके लिए सामान्य बात थी तथा इसमें वे तनिक भी लज्जा महसूस नहीं करते थे अपितु वे इसे एक शुभ कर्म समझते थे। जब कोई अतिथि आता तो गृह-स्वामिनी का कर्त्तव्य होता कि वह मदिरापान कराए। इस प्रकार के लोगों से ऐसी विनाशकारी आदत का छुड़ाना कोई आसान कार्य न था परन्तु हिजरत के चौथे वर्ष मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को ख़ुदा की ओर से आदेश मिला कि मदिरापान का निषेध किया जाता है। इस आदेश की घोषणा होते ही मुसलमानों ने मदिरापान का बिल्कुल परित्याग कर दिया। अतः हदीस में आता है कि जब शराब के अवैध होने की ईशवाणी उतरी तो हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने एक सहाबी को बुलाया और आदेश दिया कि इस नवीन आदेश की घोषणा मदीना की गलियों में कर दो। उस समय एक अन्सारी (मदीना का मुसलमान) के घर में शराब की पार्टी थी, बहुत से लोग आमंत्रित थे तथा शराब का दौर जारी था, एक बड़ा मटका ख़ाली हो चुका था, दूसरा मटका आरम्भ होने वाला था। लोग नशे में मस्त हो चुके थे और बहुत से नशे में मस्त होने के निकट थे। ऐसी अवस्था में उन्होंने सुना कि कोई व्यक्ति घोषणा कर रहा है कि आँहज़रत (स.अ.व.) के आदेश के अन्तर्गत मदिरापान अवैध कर दिया गया है। उन में से एक व्यक्ति उठकर बोला यह तो मदिरापान की निषेधाझा प्रतीत होती है। ठहरो इस संबंध में जानकारी प्राप्त कर लें, इतने में एक अन्य व्यक्ति उठा और उसने शराब से भरे मटके को अपनी लाठी मार कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया और कहा पहले आज्ञा का पालन करो, तत्पश्चात जानकारी प्राप्त करो। यह पर्याप्त है कि हमने ऐसी घोषणा सुन ली और यह उचित नहीं कि हम शराब पीते जाएं और पूछ-ताछ करें अपितु हमारा कर्त्तव्य यह है कि शराब को गलियों में बह जाने दें फिर घोषणा के संबंध में जानकारी प्राप्त करें।

इस मुसलमान का विचार उचित था क्योंकि यदि मदिरापान अवैध किया जा चुका था तो इसके पश्चात् यदि वे मदिरापान जारी रखते तो एक अपराध करने वाले होते और यदि मदिरापान अवैध नहीं किया गया तो उसका बहा देना इतना हानिप्रद न था कि उसे सहन नहीं किया जा सकता। इस घोषणा के पश्चात् मुसलमानों से मदिरापान बिल्कुल दूर हो गया। इस महान् क्रान्ति को लाने के लिए कोई विशेष प्रयास और पराक्रम की आवश्यकता नहीं पड़ी। ऐसे मुसलमान जिन्होंने इस आदेश को सुना और जिसका तुरन्त पालन हुआ, उसे देखा, सत्तर-अस्सी वर्ष तक जीवित रहे परन्तु उनमें से एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं जिसने इस आदेश के पश्चात् उसकी अवहेलना की हो। यदि ऐसी कोई घटना हुई है तो वह ऐसे व्यक्ति के संबंध में है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) से सीधे तौर पर प्रशिक्षित न हुआ हो। जब हम उसकी तुलना अमरीका के मदिरा निषेध आन्दोलन से करते हैं तथा उन प्रयासों को देखते हैं जो उस आदेश को लागू करने के लिए किए गए अथवा जो वर्षों तक यूरोप में किए गए तो स्पष्ट दिखाई देता है कि एक ओर तो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की मात्र एक घोषणा पर्याप्त थी कि इस सामाजिक दोष को अरब लोगों से समाप्त कर दे परन्तु दूसरी ओर मदिरा-निषेध

के कानून बनाए गए। पुलिस सेना तथा टैक्स विभागों के कर्मचारियों ने मदिरापान के अभिशाप को दूर करने के लिए सामूहिक तौर पर प्रयत्न किए परन्तु वे असफल रहे तथा उन्हें अपनी असफलता को स्वीकार करना पड़ा तथा मदिरापान की जीत रही तथा यह मदिरापान का अभिशाप दूर न किया जा सका। हमारे इस वर्तमान युग को उन्नति का युग कहा जाता है परन्तु जब इसकी तुलना इस्लाम के प्रारम्भिक काल से करते हैं तो हम स्तब्ध रह जाते हैं कि इन दोनों में उन्नति का युग कौन सा है। हमारा यह युग अथवा इस्लाम का वह युग, जिसने इतनी बड़ी सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया।

उहद के युद्धोपरान्त काफ़िर कबीलों के जघन्य षड्यंत्र

उहद की घटना ऐसी न थी जिसे आसानी से भुलाया जा सकता। मक्का वालों ने विचार किया था कि यह उन की इस्लाम के विरुद्ध प्रथम विजय है। उन्होंने यह समाचार समस्त अरब में प्रसारित किया तथा अरब क़बीलों को इस्लाम के विरुद्ध भड़काने तथा यह विश्वास दिलाने का माध्यम बनाया कि मुसलमान अजेय नहीं हैं और यदि वे उन्नति करते रहे हैं तो उसका कारण उनकी शक्ति नहीं थी अपितु अरब के क़बीलों की लापरवाही थी। अरब यदि संयुक्त प्रयास करें तो मुसलमानों पर विजय प्राप्त करना कोई कठिन कार्य नहीं। इस प्रोपेगन्डा का परिणाम यह हुआ कि मुसलमानों के प्रति विरोध को बहुत बल मिला तथा अन्य क़बीलों ने मुसलमानों को कष्ट पहुँचाने में मक्का वालों से भी बढ़कर भाग लेना आरम्भ किया। कुछ ने प्रत्यक्ष रूप से आक्रमण आरम्भ कर दिए और कुछ ने अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें हानि पहुँचाना प्रारम्भ कर दिया।
हिजरत के चौथे वर्ष अरब के दो क़बीले 'अज़ल' और क़ारह[1] ने अपने प्रतिनिधि मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास भेजकर सन्देश दिया कि हमारे क़बीलों में बहुत से लोग इस्लाम की ओर झुकाव रखते हैं और अनुरोध किया कि कुछ व्यक्ति जो इस्लामी शिक्षा में पारंगत हों भेज दिए जाएं ताकि वे उनके मध्य रह कर उन्हें इस नए धर्म की शिक्षा दें। वास्तव में यह एक षड्यंत्र था जो इस्लाम के कट्टर शत्रु बनू लहयान ने रचा था। उनका उद्देश्य यह था कि जब ये प्रतिनिधि मुसलमानों को लेकर आएं तो वे उनका वध करके अपनी ओर से सुफ़यान बिन ख़ालिद का प्रतिशोध लेंगे। अतः उन्होंने अज़ल और क़ारह के प्रतिनिधि कुछ मुसलमानों को अपने साथ लाने के उद्देश्य से पुरस्कार के बड़े-बड़े वादे देकर मुहम्मद (स.अ.व.) की सेवा में भेजे थे। जब 'अज़ल' और 'क़ारह' के लोगों ने मुहम्मद रसूलुल्लाह के पास पहुँच कर निवेदन किया तो आप[स.] ने उनकी बात पर विश्वास करके दस मुसलमानों को उनके साथ भेज दिया कि उन लोगों को इस्लाम की आस्थाओं और सिद्धान्तों की शिक्षा दें। जब यह दल बनू लहयान के क्षेत्र में पहुँचा तो अज़ल और क़ारह के लोगों ने बनू लहयान को सूचना पहुँचा दी और उन्हें सन्देश दिया कि या तो मुसलमानों को बन्दी बना लें या मौत के घाट उतार दें। इस घिनौने षड्यंत्र के अन्तर्गत बनू लहयान के दो सौ सशस्त्र लोग मुसलमानों का पीछा करने के लिए निकल खड़े हुए तथा 'रजीह' के स्थान में आकर उन्हें घेर लिया। दस मुसलमानों और दो सौ शत्रुओं के मध्य युद्ध हुआ। मुसलमानों के हृदय ईमान के प्रकाश से परिपूर्ण थे और शत्रु इस ईमान से खाली थे। दस मुसलमान एक टीले पर चढ़ गए और दो सौ लोगों को मुकाबले के लिए ललकारा। शत्रु ने धोखा देकर उन्हें बन्दी बनाना चाहा कि यदि तुम नीचे उतर आओ तो तुम से कुछ न कहा जाएगा, परन्तु मुसलमानों के अमीर ने कहा कि हम काफ़िरों के वादों और वचनों को भली-भांति देख चुके हैं। तत्पश्चात् उन्होंने आकाश की ओर मुख उठा कर कहा हे ख़ुदा ! तू हमारी परिस्थिति को देख रहा है, अपने रसूल को हमारी इस परिस्थिति की सूचना पहुँचा दे। जब काफ़िरों ने देखा कि मुसलमानों की इस छोटी सी जमाअत पर उनकी बातों का कोई प्रभाव नहीं होता तो उन्होंने उन पर आक्रमण कर दिया और मुसलमान निर्भयतापूर्वक उन से लड़ते रहे यहाँ तक कि दस में से सात शहीद हो गए, शेष तीन जो बच गए थे उन्हें काफ़िरों ने पुनः वादा दिया कि हम तुम्हारे प्राण बचा लेंगे इस शर्त पर कि तुम टीले से नीचे उतर आओ, परन्तु जब वे काफ़िरों के वादे पर विश्वास करके नीचे उतर आए तो काफ़िरों ने उन्हें अपने धनुषों की प्रत्यंचाओं से जकड़ कर बांध लिया। इस पर उनमें से एक ने कहा कि यह पहली अवज्ञा है जो तुम अपने समझौते के बारे में कर रहे हो। अल्लाह ही जानता है कि तुम इसके पश्चात् क्या करोगे। यह कह कर उसने उन के साथ जाने से इन्कार कर दिया। काफ़िरों ने उसे मारना और घसीटना आरम्भ कर दिया, परन्तु अन्ततः उसके मुकाबले और उसके साहस से इतने निराश हो गए कि उन्होंने उसका वहीं वध कर दिया। शेष दो को वे साथ ले गए तथा उन्हें मक्का के क़ुरैश के हाथ दास के रूप में बेच दिया, उनमें से एक का नाम ख़ुबैब[रज़ि.] था और दूसरे का नाम ज़ैद। ख़ुबैब का ख़रीदार अपने बाप का बदला लेने के लिए जिसका ख़ुबैब ने बदर के युद्ध में वध किया था ख़ुबैब[रज़ि.] का वध करना चाहता था। एक दिन ख़ुबैब[रज़ि.] ने अपनी आवश्यकता हेतु उस्तरा मांगा, उस्तरा ख़ुबैब[रज़ि.] के हाथ में था कि घर वालों का एक बच्चा खेलता हुआ उसके पास चला गया। ख़ुबैब ने उसे उठा कर अपनी जांघ पर बैठा लिया। बच्चे की मां ने जब यह दृश्य देखा तो भयभीत हो गई और उसे विश्वास हो गया कि अब ख़ुबैब बच्चे का वध कर देगा क्योंकि

शेष ..

पृष्ठ 15 का शेष

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने फरमाया:
एक मुसलमान पुरुष के लिए आदेश है कि वह अपनी पत्नी के साथ प्रेम और स्नेह से व्यवहार करे तथा उसकी संपत्ति और धन पर नज़र न रखे। हो सकता है कि कोई व्यक्ति नियमित रूप से अपनी नमाज़ अदा करने के लिए मस्जिद जाता हो, लेकिन अपने घर में अल्लाह के आदेश के अनुसार अपनी पत्नी के साथ प्रेम और स्नेह से व्यवहार न करता हो। सच तो यह है कि ऐसी स्थिति में उसकी सारी इबादतें और नमाज़ें अर्थहीन समझी जाएँगी। अल्लाह तआला इस प्रकार की उपासना और ऐसे उपासकों को पसंद नहीं करता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने फरमाया:
फिर इस्लाम मुसलमानों को अपने माता-पिता का ध्यान रखने और उनके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करने का आदेश देता है। यदि वे ऐसा करने में असफल रहते हैं, तो उनकी नमाज़ों का कोई महत्व नहीं रहेगा। इसके अलावा, अल्लाह तआला ने मुसलमानों को हुक़ूक़ुल इबाद (लोगों के अधिकार) अदा करने, समस्त मानवता की सेवा करने और हमेशा न्याय से काम लेने का आदेश दिया है। यदि कोई व्यक्ति इन महत्वपूर्ण मूल्यों को अपने दैनिक जीवन में अपनाने में असफल रहता है, लेकिन इसके बावजूद नियमित रूप से मस्जिद आता है, तो उसकी इबादत व्यर्थ जाएगी और निराशा का कारण बनेगी।

वास्तव में अल्लाह तआला ने तो यह फरमाया है कि जो व्यक्ति उसके आदेशों का पालन नहीं करता, उसकी नमाज़ें उसी के विनाश का कारण बन जाएँगी। सच तो यह है कि यदि किसी मुसलमान की नमाज़ें उसे लोगों के अधिकारों को पूरा करने की ओर नहीं ले जातीं, तो उसकी नमाज़ों को 'वास्तविक इबादत' नहीं कहा जाएगा।

जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने फरमाया है:
"समस्त मानवता पर दया करना और उसके साथ सहानुभूति रखना बहुत बड़ी इबादत है और अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने का यह एक महान साधन है।"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने फरमाया:
इसलिए वास्तविक इबादत की मांग यह है कि निःस्वार्थ भाव से लोगों के अधिकार पूरे किए जाएँ। केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए दूसरों के अधिकार अदा किए जाएँ। जब कोई व्यक्ति इस भावना के साथ कार्य करेगा, तो अल्लाह न केवल उसकी नमाज़ों को इबादत में शामिल करेगा, बल्कि उसके हर कार्य को भी इबादत में गिनेगा।

इसलिए यह बात सबके लिए स्पष्ट है कि वे देख सकें कि इन शिक्षाओं में कितनी सुंदरता है। अतः जो लोग अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करते हैं, उनके लिए सफलता और इबादत के अनेक अवसर प्रदान किए गए हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने फरमाया:
जो भी व्यक्ति अल्लाह की इबादत के लिए मस्जिद आए, या एक सच्चा मुसलमान जो अल्लाह तआला के सामने झुकने के लिए दिन में पाँच बार मस्जिद में प्रवेश करता है, उसे चाहिए कि वह लगातार अपना आत्म-परीक्षण करता रहे। उसे अपने आप से पूछना चाहिए कि दो नमाज़ों के बीच के समय में उसने लोगों के अधिकारों की पूर्ति के लिए कितने अच्छे कार्य किए। यदि कोई व्यक्ति लोगों के अधिकार अदा नहीं कर रहा है, तो जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ, उसकी इबादत का कोई महत्व नहीं रहेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने फरमाया:
यही मस्जिद की वास्तविकता है और यही एक सच्चे मुसलमान की इबादत की वास्तविकता भी है। इसलिए जिन लोगों को इस मस्जिद के निर्माण पर कोई चिंता है, या जो इस क्षेत्र में मुसलमानों के इबादत-स्थल के संभावित प्रभाव को लेकर चिंतित हैं, उन्हें निश्चिंत रहना चाहिए।

इसी प्रकार यदि कुछ लोग इस बात से चिंतित हैं कि मस्जिद के आसपास रहने वाले लोगों को किसी प्रकार की असुविधा होगी, या जो यह समझते हैं कि यह मस्जिद स्थानीय लोगों के लिए किसी डर का कारण बनेगी, तो वे भी निश्चिंत रहें कि ऐसा बिल्कुल नहीं होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने फरमाया:
ऐसे सभी लोगों को यह याद रखना चाहिए कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत एक अत्यंत शांतिप्रिय जमाअत है, जो इस्लाम की वास्तविक और मानवता-से-भरी शिक्षाओं पर अमल करने का प्रयास करती है।

शेष ..

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ऑस्ट्रेलिया दौरा 2013

(भाग -3)

...इसके बाद सांसद Hon. Michael Latter ने अपना संबोधन देते हुए कहा:

मैं आज अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे इस कार्यक्रम में, जिसमें ख़लीफ़तुल मसीह मौजूद हैं, कुछ कहने का अवसर मिल रहा है। उन्होंने कहा कि जब मुझसे यहाँ आने से पहले आज के कार्यक्रम में बोलने का अनुरोध किया गया, तो मैंने ख़लीफ़तुल मसीह के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त की। आदरणीय ख़लीफ़तुल मसीह के उच्च स्थान और दुनिया के जिन नेताओं से उनकी मुलाकात हो चुकी है, उसके बारे में जानकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि मुझे यह सौभाग्य और सम्मान मिल रहा है कि मैं ख़लीफ़तुल मसीह से मिल सकूँ। उन्होंने विशेष रूप से हुज़ूर अनवर से दुआ की भी प्रार्थना की।

उन्होंने हुज़ूर अनवर को संबोधित करते हुए कहा, "ख़लीफ़तुल मसीह! जब आप और आपकी जमाअत Love For All, Hatred For None (सबके लिए प्रेम, किसी से घृणा नहीं) के सिद्धांत को सामने रखकर काम करते हैं और जब आप पूरी दुनिया को शांति का संदेश देते हैं तथा उसे फैलाने का प्रयास करते हैं, जब आप मानव सेवा की बात करते हैं, तो मुझे यह कहने दीजिए कि आपका संदेश एक जीवंत संदेश है। आपकी कम्युनिटी इस संदेश को केवल समझती ही नहीं, बल्कि हर दिन अपने आचरण के माध्यम से इसे फैलाने का प्रयास भी करती है।"

अपने संबोधन के अंत में उन्होंने एक बार फिर हुज़ूर अनवर का ऑस्ट्रेलिया और विशेष रूप से ब्रिस्बेन आने पर धन्यवाद किया तथा हुज़ूर अनवर की सेवा में एक उपहार भी प्रस्तुत किया।

...इसके बाद पुलिस कमिश्नर Ian Stewart ने अपना संबोधन प्रस्तुत किया।

उन्होंने कहा कि यह वास्तव में आश्चर्य की बात है कि आदरणीय ख़लीफ़तुल मसीह जैसे महान नेता आज हमारे बीच ब्रिस्बेन में मौजूद हैं और मैं उनका इस शहर और इस राज्य में स्वागत करता हूँ।

उन्होंने कहा, "आप लोग सोच रहे होंगे कि एक पुलिस कमिश्नर आज यहाँ क्या कर रहा है? तो मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मैं आज यहाँ इसलिए आया हूँ ताकि ख़लीफ़तुल मसीह की मौजूदगी में खुले तौर पर यह कह सकूँ कि अहमदिया मुस्लिम कम्युनिटी, जो एक अलग संस्कृति और धार्मिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है, हमारे साथ मिलकर काम करती है, सभी लोगों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करती है और आप लोग उच्च नैतिक साहस का प्रदर्शन करते हैं।"

उन्होंने यह भी कहा कि मैं इस बात से बहुत प्रभावित हुआ हूँ कि लोग आदरणीय ख़लीफ़तुल मसीह का कितना अधिक सम्मान करते हैं।

...इसके बाद सांसद Hon. Michael Pucci ने अपना संबोधन प्रस्तुत किया।

उन्होंने अपने संबोधन में कहा, "मैं आदरणीय ख़लीफ़तुल मसीह का धन्यवाद करता हूँ कि आपने हमारे शहर में आकर हमें सम्मान दिया है।"

उन्होंने कहा कि अहमदिया कम्युनिटी हमारे क्षेत्र Logan का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और कठिनाई हो या समृद्धि, हर परिस्थिति में जमाअत अहमदिया क्वींसलैंड के लोगों की सेवा करती रही है। विभिन्न सेवा संस्थाओं के साथ और अलग-अलग प्राकृतिक आपदाओं के समय भी जमाअत की सेवाएँ विशेष रूप से सामने आती हैं।

सांसद ने आगे कहा कि आप लोग केवल अहमदिया कम्युनिटी के ही नहीं बल्कि लोगन (Logan) कम्युनिटी के भी प्रतिनिधि हैं। उन्होंने मानव सेवा की उस भावना की सराहना की जिसके साथ अहमदिया कम्युनिटी सेवा करती है। उन्होंने कहा कि हमारे अहमदिया कम्युनिटी के साथ पहले भी बहुत अच्छे संबंध रहे हैं और आगे भी ये संबंध और अधिक मजबूत होते रहेंगे। शांति की स्थापना के लिए हम सब आपके साथ हैं। उन्होंने अपने संबोधन का समापन Love For All, Hatred For None के संदेश के साथ करते हुए कहा कि हम सब मिलकर इसे साकार कर सकते हैं।

इसके बाद शाम 7 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ संबोधन के लिए मंच पर पधारे।

संबोधन शुरू करने से पहले हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि सभी अतिथि वक्ताओं के भाषणों के बाद तालियाँ बजाई गईं, लेकिन Aunty Robyn के भाषण के बाद तालियाँ नहीं बजाई गई थीं। इसलिए सबसे पहले आंटी Robyn के लिए तालियाँ बजाइए। इसके बाद पूरे हॉल ने तालियाँ बजाईं।

ब्रिस्बेन में मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का संबोधन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फरमाया:

सभी सम्मानित अतिथिगण! अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। आप सभी पर अल्लाह तआला की रहमत हो।

आज ऑस्ट्रेलिया के ब्रिस्बेन (Brisbane) में अहमदिया मुस्लिम जमाअत के लिए खुशी का दिन है, क्योंकि इस शहर में अपनी पहली मस्जिद का उद्घाटन हो रहा है। एक सच्चे मुसलमान के लिए मस्जिद का बहुत बड़ा महत्व होता है। लेकिन इस विषय पर कुछ कहने से पहले मैं आप सभी अतिथियों का दिल से धन्यवाद करना चाहता हूँ, जो इस उद्घाटन समारोह में शामिल हुए और जमाअत अहमदिया की इस खुशी में सहभागी बने।

इस्लाम से संबंध न होने के बावजूद आप सभी का मुसलमानों के इबादत-स्थल के उद्घाटन समारोह में शामिल होना आपकी उदारता, सहिष्णुता और उच्च नैतिक मूल्यों का प्रमाण है। इस संबंध में आपका जितना भी धन्यवाद किया जाए, कम है। वास्तव में धन्यवाद करना ही इस मस्जिद के वास्तविक उद्देश्यों को पूरा करने और इसके अधिकारों को निभाने का एक माध्यम है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फरमाया:

एक सच्चे मुसलमान के लिए, जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता को अपनी ज़िंदगी का उद्देश्य मानता है, आवश्यक है कि वह ऐसे कार्य करे जिनसे अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त हो। निस्संदेह, धन्यवाद देना और कृतज्ञ होना भी अल्लाह को प्रसन्न करने तथा उसकी रहमतें और बरकतें प्राप्त करने का एक तरीका है। अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन में स्पष्ट रूप से फरमाया है कि यदि कोई व्यक्ति अल्लाह का शुक्र अदा करेगा, तो अल्लाह उसे और अधिक इनामों से नवाज़ेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फरमाया:

हमारे विश्वास के अनुसार पवित्र क़ुरआन, जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अवतरित हुआ, शरीअत की अंतिम पुस्तक है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही उसकी शिक्षाओं को सबसे अच्छी तरह समझने वाले थे। निस्संदेह, क़ुरआन का पूर्ण ज्ञान और गहरी समझ केवल आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ही प्राप्त थी और आपने ही शुक्र अदा करने के महत्व को स्पष्ट रूप से बताया है। इसलिए, जहाँ एक ओर धन्यवाद देने की शिक्षा मनुष्य को उच्च नैतिक स्तर की ओर ले जाती है, वहीं यह एक सच्चे मुसलमान को अल्लाह तआला का निकटता भी प्रदान करती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फरमाया:

इसी संदर्भ में, जहाँ यह मस्जिद हमें इस बात पर अल्लाह का शुक्र अदा करने की ओर ध्यान दिलाती है कि उसने लंबे इंतज़ार के बाद हमें इस क्षेत्र में इबादत के लिए एक स्थान प्रदान किया, वहीं यह मस्जिद हमें इस बात की भी याद दिलाती है कि हम आप सभी का धन्यवाद करें, जो हमारी खुशी के इस अवसर में शामिल हुए।

इस अवसर का लाभ उठाते हुए मैं उन सभी स्थानीय लोगों का भी धन्यवाद करना चाहता हूँ जिन्होंने इस मस्जिद के निर्माण में हमारी सहायता की। इस क्षेत्र में रहने वाले लोग विशेष रूप से हमारे धन्यवाद के पात्र हैं, क्योंकि यदि हमारे इन नए पड़ोसियों ने अपनी सहमति न दी होती, तो हम यह मस्जिद नहीं बना सकते थे। इसलिए आप सभी का धन्यवाद।

इसी प्रकार मैं स्थानीय परिषद (Local Council) के सदस्यों और मेयर का भी धन्यवाद करना चाहता हूँ कि उन्होंने हमें मस्जिद बनाने के लिए स्थान उपलब्ध कराया, ताकि हम सब एक साथ मिलकर एक ईश्वर की उपासना कर सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फरमाया:

निस्संदेह, एक सच्चे मुसलमान के लिए अल्लाह तआला की इबादत का बहुत अधिक महत्व है। निश्चित रूप से, अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार एक मुसलमान के लिए प्रतिदिन पाँच बार अपने पालनहार के सामने झुकना एक महत्वपूर्ण कर्तव्य है, लेकिन यह इबादत का केवल एक पक्ष है। वास्तव में, हर सच्चे मुसलमान के लिए अल्लाह तआला की इबादत केवल अनिवार्य नमाज़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका अर्थ इससे कहीं अधिक व्यापक है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फरमाया:

हम अहमदी मुसलमान इस बात पर विश्वास रखते हैं कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ही मसीह माऊद और इमाम महदी हैं। हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला ने उन्हें इस युग में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दी हुई शिक्षाओं को फैलाने के लिए भेजा है। इसलिए हज़रत मसीह माऊद अलैहिस्सलाम ने बड़ी स्पष्टता के साथ इबादत की अवधारणा को समझाया है और उसकी वास्तविकता तथा महत्व को विस्तार से बयान किया है। मैं कुछ उदाहरणों के माध्यम से इबादत की वास्तविकता को स्पष्ट करूँगा।

शेष पृष्ठ 14 पर

Editor: Shaikh Mujahid Ahmad
Dy. Editor: Syed Mohiuddin Farid
Editor : +91-9915379255
akhbaarbadarhindiqdn@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** *Qadian*
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 20-27 August 2026 Issue No. 34-35

Act. Manager
Athar Ahmad Shamim
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 600/- (Per Issue : Rs. 12/-) (WEIGHT: 20-50 gms/issue)

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

{97}बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

मुझसे मियाँ अब्दुल्लाह साहिब सनौरी ने बयान किया कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 1889 में लुधियाना में बैअत का ऐलान किया, तो बैअत लेने से पहले आप शेख मेहर अली, रईस होशियारपुर, के बुलावे पर उनके बेटे की शादी में शामिल होने के लिए होशियारपुर तशरीफ़ ले गए। मेरे साथ मीर अब्बास अली और शेख हामिद अली भी थे। रास्ते में इक्के पर सफर करते हुए हुज़ूर ने हमें अपने उस चिल्ले (एकांत साधना) का हाल सुनाया, जिसमें आपने लगातार छह महीने तक रोज़े रखे थे। हज़रत साहिब फरमाते थे कि मैंने एक छींका (रस्सी से लटकने वाली टोकरी) रखा हुआ था। उसे मैं अपने चोबारे से नीचे लटका देता था, उसमें मेरी रोटी रख दी जाती थी, फिर मैं उसे ऊपर खींच लेता था।

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब कहते थे कि शेख मेहर अली ने यह व्यवस्था की थी कि दावत में खाने के समय बड़े लोगों के लिए अलग कमरा था और उनके साथियों तथा सेवकों के लिए अलग कमरा था। लेकिन हज़रत साहिब का यह नियम था कि अपने साथ रहने वालों को हमेशा अपने साथ ही बिठाते थे। इसलिए इस अवसर पर भी आप हम तीनों को स्वयं अंदर जाने से पहले कमरे में भेजते थे, फिर खुद अंदर आते थे और हमें अपने दाएँ-बाएँ बिठाते थे।

उन्हीं दिनों होशियारपुर में मौलवी महमूद शाह छछ हज़ारवी का व्याख्यान हो रहा था। वह बहुत प्रसिद्ध, नामी और लोकप्रिय वक्ता था। हज़रत साहिब ने मेरे हाथ बैअत का इश्तिहार देकर उसके पास यह संदेश भिजवाया कि आप अपने व्याख्यान के दौरान किसी उचित अवसर पर मेरा यह बैअत वाला इश्तिहार पढ़कर सुना दें, और मैं स्वयं भी आपके व्याख्यान में आऊँगा। उसने वादा कर लिया।

इसलिए हज़रत साहिब उसके व्याख्यान में तशरीफ़ ले गए, लेकिन उसने वादा पूरा नहीं किया। उसने हुज़ूर का इश्तिहार व्याख्यान के दौरान नहीं सुनाया, बल्कि उस समय पढ़ा जब लोग उठकर जाने लगे थे। उस समय तक अधिकांश लोग जा चुके थे। इस पर हज़रत साहिब को बहुत दुःख हुआ। आपने फरमाया, "हम तो केवल उसके वादे पर भरोसा करके उसके व्याख्यान में आए थे कि हमारी तबलीग होगी, वरना हमें वहाँ आने की क्या आवश्यकता थी। उसने वादा तोड़ा है।"

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब कहते थे कि फिर थोड़े ही समय के भीतर वही मौलवी चोरी के आरोप में फँस गया और बहुत अपमानित हुआ।

{98}बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

मुझसे मियाँ अब्दुल्लाह साहिब सनौरी ने बयान किया कि जब हज़रत साहिब ने लुधियाना में पहले दिन बैअत ली, तो उस समय आप एक कमरे में बैठ गए थे और दरवाज़े पर शेख हामिद अली को नियुक्त कर दिया था। उन्हें यह भी कह दिया था कि जिनका नाम मैं लेता जाऊँ, उन्हें कमरे के अंदर बुलाते जाओ।

इसलिए आपने सबसे पहले हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल को बुलाया। उनके बाद मीर अब्बास अली को, फिर मियाँ मुहम्मद हुसैन मुरादाबादी खुशनवीस[1] को, और चौथे नंबर पर मुझे बुलाया। उसके बाद एक-दो और लोगों को नाम लेकर अंदर बुलाया। फिर शेख हामिद अली से कहा कि अब एक-एक व्यक्ति को स्वयं अंदर भेजते जाओ।

ख़ाकसार निवेदन करता है कि शुरुआत में हुज़ूर हर व्यक्ति से अलग-अलग बैअत लेते थे, लेकिन बाद में सबकी बैअत एक साथ लेने लगे।

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब ने यह भी बयान किया कि पहले दिन जब आपने बैअत ली, तो वह तारीख़ 20 रजब 1306 हिजरी, अनुसार 23 मार्च 1889[2] थी। उस समय बैअत के शब्द इस प्रकार थे—

"आज मैं अहमद के हाथ पर अपने सभी गुनाहों और बुरी आदतों से तौबा करता हूँ, जिनमें मैं पहले पड़ा हुआ था। और सच्चे दिल तथा दृढ़ निश्चय के साथ वचन देता हूँ कि जहाँ तक मेरी शक्ति और समझ होगी, मैं अपनी जीवन की अंतिम साँस तक सभी गुनाहों से बचता रहूँगा। मैं दीन को दुनिया की आराम-तलबी और अपने मन की इच्छाओं पर प्राथमिकता दूँगा, और 12 जनवरी को प्रकाशित दस शर्तों पर अपनी पूरी सामर्थ्य के अनुसार अमल करता रहूँगा। साथ ही अपने पिछले सभी गुनाहों की अल्लाह तआला से माफी माँगता हूँ।"

"अस्तग़फ़िरुल्लाह रब्बी, अस्तग़फ़िरुल्लाह रब्बी, अस्तग़फ़िरुल्लाह रब्बी मिन कुल्लि ज़म्बिन व अतूबु इलैहि। अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू, व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू। रब्बि इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी वअ'तरफ्तु बि ज़म्बी, फ़ग़फ़िर ली ज़ुनूबी, फ़इन्नहू ला यग़फ़िरुज़-ज़ुनूबा इल्ला अन्त।"

ख़ाकसार निवेदन करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सामान्यतः बैअत करने वालों का हाथ अपने हाथ में लेकर हाथ मिलाने के तरीके से बैअत लेते थे। लेकिन कुछ लोगों से आपने हथेली के ऊपर कलाई पकड़कर भी बैअत ली थी। इसलिए हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल फरमाते थे कि मेरी बैअत आपने इसी प्रकार ली थी।

इसके अतिरिक्त ख़ाकसार निवेदन करता है कि मियाँ अब्दुल्लाह साहिब बयान करते थे कि पहली बैअत के दिन मौलवी अब्दुल करीम साहिब भी वहीं मौजूद थे, लेकिन उन्होंने उस समय बैअत नहीं की।

(अधिक विवरण के लिए देखें: उर्दू भाग द्वितीय, रिवायत संख्या 315 ,309)

पृष्ठ 2 का शेष

शेष ..

ए-राशिदीन थे। मैं भी अपने ख़ुत्बों में इसका उल्लेख करता रहा हूँ। युद्धों के दौरान हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ सबसे अधिक ख़तरनाक स्थानों पर होते थे। स्वयं हज़रत अली फ़रमाते हैं कि मैं भी ऐसे स्थान पर नहीं होता था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तो यज़ीद को "पलीद" (अपवित्र) लिखा है। इस विषय में आप हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की छोटी पुस्तक "इस्लाम में इख़्तिलाफ़ात का आग़ाज़" पढ़ें। इसी प्रकार हज़रत अली के बारे में भी उनकी एक पुस्तक है, उसे भी पढ़ें।

एक प्रश्न किया गया:

हम लोग जमाअत और पूरी दुनिया के लिए एक आदर्श कैसे बन सकते हैं?

हुज़ूर ने फ़रमाया: कल ही मैंने इसका तरीका बताया है। यदि आप बैअत की शर्तों पर अमल कर लें, तो यही सबसे बड़ा आदर्श है। बहुत से लोग कहते हैं कि हमने अहमदियों का व्यवहारिक नमूना देखकर बैअत की है।

हुज़ूर ने फ़रमाया: पिछले दिनों मैंने दावत इलल्लाह के विषय पर ख़ुत्बा दिया था। उसमें भी मैंने कहा था कि अपना आदर्श व्यवहार दिखाएँ।

इस अवसर पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक मौलवी का प्रसंग सुनाया था। उस मौलवी ने मस्जिद में आर्थिक कुर्बानी के लिए भाषण दिया। उसके भाषण से प्रभावित होकर उसकी पत्नी ने अपने सोने के कड़े चंदे में देने के लिए उसे दे दिए। तब मौलवी साहब ने कहा कि मैंने तो यह बात केवल लोगों की भावनाएँ जगाने के लिए कही थी, यह हमारे लिए नहीं थी।

हुज़ूर ने फ़रमाया:

जब ऐसे कर्म करने वाले लोग होंगे, तो उनका क्या प्रभाव पड़ेगा? जबकि हमारे यहाँ तो हर व्यक्ति आर्थिक कुर्बानी करता है। मैं भी करता हूँ और आप लोग भी करते हैं।

हुज़ूर अक़दस की उपर्युक्त ऑनलाइन मुलाक़ात का सार प्रस्तुत करते हुए जमाअत के सभी सदस्यों, विशेष रूप से ख़ुद्दाम से अनुरोध किया जाता है कि वे एम.टी.ए. पर इस कार्यक्रम को अवश्य सुना करें और दूसरों को भी सुनाएँ।

अल्लाह तआला हम सभी को यह तौफ़ीक़ प्रदान करे कि हम अपने प्यारे इमाम के पवित्र वचनों को ध्यानपूर्वक सुनें और उन पर पूरे दिल और जान से अमल करें। वबिल्लाहि तौफ़ीक़।

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad